महासमुन्द से श्री शिखरजी महातीर्थ पद यात्रा संघ विशेषांक

जैन एकता की अनूठी मिसाल

आयोजक
श्री जैन श्वे. श्री संघ
महासमुन्द, छत्तीसगढ

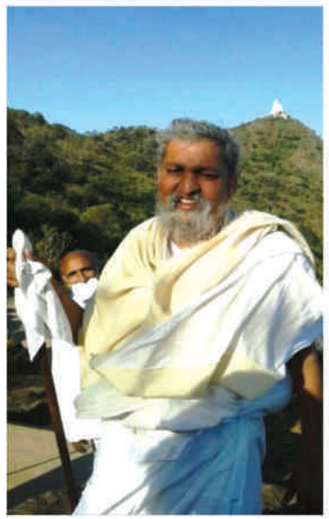

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला का मासिक मुख-पत्र

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

▪ वर्ष : 11 ▪ ▪ अंक : 1 ▪ ▪ 5 अप्रेल : 2014 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिसद्गुरुभ्यो नमः
पू. गणनायक श्री सुखसागरसद्गुरुभ्यो नमः

श्री सूरत महानगरे
पाल मध्ये
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनमंदिर के
भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे
सकल श्री संघ को हार्दिक भावभरा आमंत्रण

पावन निश्रा
पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्य
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

प्रेरणा एवं स्मृति
पूजनीय पिताजी
श्री रिखबचंदजी गुलेच्छा
पूजनीया माताजी
श्रीमती जमुदेवी गुलेच्छा

प्रतिष्ठा मंगल मुहूर्त्त
वि. 2071 ज्येष्ठ सुदि 6 बुधवार ता. 4 जून 2014

आयोजक एवं निमंत्रक
शा. भंवरलाल हनवंतराज पारसमल मोहनलाल
गौतमचंद ओमप्रकाश गुलेच्छा, मोकलसर-सूरत-अहमदाबाद
श्रीमती जमुबाई रिखबचंदजी गुलेच्छा चेरिटेबल ट्रस्ट-सूरत

महोत्सव स्थल
वेस्टर्न शिखरजी रेजिडेन्सी
ट्रिनिटी बिज़नेस पार्क के पास, ग्रीन सिटी रोड, पाल,
सूरत गुजरात (फोन- 94268 56388 ६ 98251 51279)
Email- gautamrgulechha@gmail.com

षष्टम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धांजलि

21.9.1946
जन्म :

9.5.2008
स्वर्गवास :

श्री भंवरलालजी संकलेचा

सुपुत्र श्री धरमचन्दजी संकलेचा (रासोणी) मरूधर में पादरू

आपकी यादों के उजालों में,
हम सद्मार्ग अनुगमन करें... पिताश्री !
बहुत लम्बा सफर तय कर,
अनेक पतली संकरी,
पगडंडियों को लाँघ कर,
टेढ़ी मेढ़ी सीधी सपाट ,
सड़कों को नाप कर।

हे पिताश्री ! आप देह मुक्त हो,
उस परम निष्ठ जीवन की महक,
जो सत्य ही जीवन पाथेय,
इसका एहसास करवा रही,
लोक सेवा, समाज सेवा का जो,
आपने पावन पथ प्रशस्त किया,
वह ही हमारे कर्त्तव्य मार्ग,
का भी दिशा निर्देश दे।

आडम्बर से कहीं दूर,
कर्मठता की अटूट मिसाल आप,
हम भी सदा
उस मार्ग के राही बने,
ऐसा पावन वरदान दो
पिताश्री ! आप के अदम्य साहस,
शौर्य एवं शक्ति से,
निरंतर प्राणवान हो।

हम,
ऊँच नीच, भेद भाव से हित हीन,
मानव स्नेह जो विकीर्ण आपने किया,
सभी द्वेष कुकृत्यों से दूर,
उस स्नेह को आपने वरा,
उसे हम जीवन में चरितार्थ कर
उन्नति के चरम शिखर कर वरण करें।
हे प्रभो ! हम परिजनों पर,
करना बस इतनी कृपा,
पूज्य भंवरलालजी की,
उत्कृष्ट यादों के उजालों में,
हम सद्मार्ग अनुगमन करें।

श्रद्धानवत : धर्मपत्नी मोहिनी देवी भ्राता : जुगराज, नेमीचन्द, मोतीलाल, प्रवीणकुमार
बहन-बहनोई : नाजुबाई-स्व. मोहनलालजी बागरेचा, कमलाबाई-स्व. भंवरलालजी तातेड़
पुत्र-पुत्रवधु : ललितकुमार-ललितादेवी, राजकुमार-संगीतादेवी, कैलाशकुमार, गौतमचन्द-शिल्पादेवी
पौत्री-जंवाई : निकिताबाई-नवीनकुमारजी बाफना पौत्र-पौत्री : मनीष, मिशाल, रूचिका, काजोल, ईशीता
पड़ दोहिता - प्रीत बाफना

फर्म :

नवनिधि इन्टरप्राईजेज
384, मिन्ट स्ट्रीट, ऑफिस नं. 29, दूसरा माला,
चैन्नई - 600079 फोन : 044-25291795

रूपम् कलेक्शन्स
15-8-485, फिलखाना, ओमश्री सांई कॉम्पलेक्स,
हैदराबाद फोन : 040-24612258

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
2. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	07
3. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	10
4. श्री सम्मेद शिखर पद यात्रा संघ का विवरण		12
5.देह से देवालय की ओर	प्रवर्तक श्री रतनमुनिजी म.सा.	20
6. व्यस्त जीवन को मस्त बनाने का उपक्रम..	तपस्वी डॉ. सतीशमुनिजी म.सा.	22
7. अनन्त सुखों की प्राप्ति के लिए ऐसी यात्राएँ जरुरी	तपस्वी रमणमुनिजी म.सा.	23
8. सुंस्कारों का बीजारोपण है यह यात्रा	आदित्य मुनि 'अजेय'	24
9. मनोभावना पूर्णता का आधार है यह यात्रा	तपस्वी शुक्लमुनिजी म.सा.	26
10. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	28
11. संरक्षक परिचय : श्री भंवरलालजी संकलेचा	भूपत चौपड़ा	31
12. मेरे बारे में मेरी अनुभूति	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	32
13. पंचांग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	34
14. समाचार दर्शन	संकलन	36-59
15. जहाज मंदिर पहेली 94 का उत्तर		60
16. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-96	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	61
17. तत्त्वावबोध	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	65
17. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	66

आगम मंजूषा

परमात्मा महावीर

इमां जं कीरते कम्मं तं परतो व भुज्जई।
मूलसेकेसु रूक्खेसु फलं साहासु दिस्सति।।

- इसि. 30, 1

जो कर्म यहां किये जाते हैं आत्मा उन्हें परलोक में अवश्य भोगती है। जिन वृक्षों का मूल सिंचित किया गया है, उसका फल शाखाओं पर दिखाई देता है।

इचलकरंजी में चातुर्मास हेतु

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास हेतु मंगल नगर प्रवेश **6 जुलाई 2014 को प्रातः 8 बजे होगा।**

हमारे प्रतिनिधि

श्री कैलाश बी. संखलेचा चैन्नई मो.- 094447 11097
श्री मदनलाल छाजेड बाड़मेर मो.- 094135 26581
श्री मुकेश प्रजापत, बाड़मेर मो. - 097843 26130

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 11 अंक : 1 5 अप्रेल 2014 मूल्य 20 रू.

संयोजन : आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.
अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ	: 7,000 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

जीने की कला

जीवन में कभी-कभी ऐसी विकट स्थितियां बन जाती है, जब निर्णय करना मुश्किल हो जाता है। जब व्यक्ति चारों तरफ से अपने आपको घिरा हुआ महसूस करता है, जब इधर कुआं उधर खाई नजर आती है, ऐसी स्थिति में उचित समाधान कैसे पाया जा सकता है!

मैंने एक कहानी पढी थी।

जंगल में एक गर्भवती हिरणी प्रसव हेतु सुरक्षित स्थान की खोज कर रही थी। नदी के किनारे घनी झाडियों के पास बिछी हुई मुलायम घास वाली जगह उसे सुरक्षित प्रतीत हुई।

वह प्रसव पीडा से गुजर रही थी कि अचानक मौसम में बदलाव आ गया। आसमान में काले घने बादल छा गये। घनघोर घटाओं से बिजलियां कडकने लगी। अचानक जंगल में बिजली गिरी और आग लग गई। हिरणी घबरा उठी। तभी उसने बाईं ओर देखा तो उसके पांवों तले जमीन खिसक गई। क्योंकि वहाँ एक तीरंदाज शिकारी उसकी ओर ही निशाना साध रहा था। उसने दायीं ओर देखा तो उधर एक शेर उसकी ओर बढ रहा था।

वह घबरा उठी। अब मैं कहाँ जाऊँ! इधर तीर का निशाना है, तो उधर शेर है, आग की लपटें भी तेज हो रही है। ओह! क्या होगा मेरा और मेरे बच्चे का!

क्या मैं सुरक्षित रह पाऊँगी! क्या मैं सही सलामत अपने बच्चे को जन्म दे पाऊँगी! या कि मैं तीर से मारी जाऊँगी या शेर के खूंखार पंजों से मौत मिलेगी!

चारों ओर संकट! उसने तुरंत अपने विचारों की दिशा बदली! मैं भी उन संकटों से घबरा रही हूँ, जो आने वाले हैं, पर आये नहीं है। मुझे केवल अपनी प्रक्रिया पर ध्यान देना चाहिये।

और उसने अपना पूरा मन मानस, ऊर्जा सब कुछ अपने बच्चे को जन्म देने की ओर केन्द्रित कर दिया।

और तभी जैसे चमत्कार हुआ!

कडकडाती बिजली से तीरंदाज की आँखें चुंधिया गई, उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। हडबडाहट में उसका तीर चल गया, पर निशाना चूक गया। तीर सीधा शेर को जा लगा। बरसात तेज हो गई। जंगल में लगी आग बुझ गई। और हिरणी ने एक स्वस्थ शावक को जन्म दे दिया।

जीवन में बहुत पल ऐसे आते हैं जब हम चारों तरफ से समस्याओं से घिर जाते हैं। ऐसी स्थिति में नकारात्मक विचारों को त्याग कर सकारात्मक विचारों के आधार पर स्वस्थता और संतुलन के साथ यदि सही निर्णय लिया जाता है तो संकटों से उबरने में समय नहीं लगता।

तीर्थाधिपति श्री मुनिसुव्रतस्वामिने नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिसद्गुरुभ्यो नमः
पू. गणनायक श्री सुखसागरसद्गुरुभ्यो नमः
पू. पवित्रगुरुवर्यायै नमः

श्री नाशिक-इन्दौर मुख्य मार्ग पर आडगांव में निर्मित विहार धाम में

विशाल कच्छपासन बिराजित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी

के

भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव निमित्ते

पावन प्रतिष्ठा मुहूर्त्त
वि. सं. 2071 आषाढ वदि 6 बुधवार
ता. 18 जून 2014

सकल श्री संघ को

भावभरा आमंत्रणम्

पावन निश्रा
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

पावन प्रेरणा
पूजनीया खान्देश शिरोमणि गुरुवर्या
श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या
पूजनीया विदुषी साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा.

सुकृत में सहभागी होने की विनंती है।

योजना

आधार स्तंभ- 108000 रू. परिवार के 2 नाम उचित स्थान पर शिलालेख पर अंकित होगा तथा पत्रिका में 2 फोटो व 5 नाम प्रकाशित होंगे।
रत्न स्तंभ- 41 हजार रू. परिवार के 5 नाम पत्रिका में प्रकाशित किये जायेंगे।
स्वर्ण स्तंभ- 31 हजार रू. परिवार के 3 नाम पत्रिका में प्रकाशित किये जायेंगे।
रजत स्तंभ- 21 हजार रू. परिवार के 2 नाम पत्रिका में प्रकाशित किये जायेंगे।
विरहमान सीमंधर स्वामी प्रतिमा सामुहिक भराने की अनूठी योजना 11 हजार रुपये मात्र ।

निवेदक : श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी ट्रस्ट, नाशिक

संपर्क सूत्र
श्री चन्द्रशेखर सर्राफ- 098220 11766, श्री रमेश निमाणी- 099601 71111, श्री राजेश रांका- 093945 76465,
श्री विनोद मेहता- 098220 98690, डॉ. श्री पुखराज भंसाली- 090283 44446, श्री प्रशांत श्रीमाल- 098490 21023

प्रीत की रीत

साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री पद्मप्रभस्वामी स्तवन

बीजे वृक्ष अनंतता रे लाल,
पसरे भूजल योग रे, वा.
तिम मुझ आतम संपदा रे लाल,
प्रगटे प्रभु संयोग रे, वा.॥३॥

यदि बीज को जल और जमीन की अनुकूलता प्राप्त हो जाय तो उसमें अनंत वृक्ष को उत्पन्न करने की योग्यता प्रकट हो सकती है। बीज का वृक्ष के रूप में फैलाव हो सकता है। मेरी आत्म संपदा परमात्मा की वाणी से अपने छिपे हुए स्वरूप को प्रकट कर सकती है।

श्रीमद्जी ने प्रस्तुत पद्य में खोजना व शोधना (शोधन करना) इन दोनों के बीची की भेद रेखा को स्पष्ट किया है। एक रूपक के माध्यम से इसे और अधिक स्पष्ट से समझे।

एक व्यक्ति गहन उदासीन होकर बड़े-बड़े आँसू बहा रहा था। आसपास के लोगों ने उससे पूछा-भाई! तुम्हारे रूदन का क्या कारण है?उसने कहा-अभी मेरी ससुराल से समाचार आया है कि मेरी पत्नी जो पीहर गई थी वह विधवा हो गयी! मैं अपनी पत्नी की वेदना की कल्पना से दुखी हूँ। लोग हँसने लगे। उन्होंने कहा- अरे मूर्ख! तेरे जीवित रहते तेरी पत्नी विधवा कैसे हो सकती है?

हम सब व्यक्ति के अज्ञान पर मुस्कुरा सकते हैं परन्तु सच यह है कि कमोबेश हमारी भी ऐसी स्थिति है। हम सभी यही कहते हैं कि हमारी आत्मा, हमारा आनन्द खो गया है। हम उसे ढूंढ रहे हैं और वाकई हम यहीं भूल कर बैठते हैं। खोजना तब होता है जब कोई खो जाता है। और जो एक बार खो जाय उसे पकड़कर ले भी आयेंगे तो क्या गारंटी कि वह दुबारा नहीं खोयेगा। आगंतुक से हमारा कोई प्रयोजन है?हमारा प्रयोजन तो उससे है जो छिप तो सकता है पर खो नहीं सकता। आत्मा का आनंद, उसके गुण कहीं से लाने नहीं है। भीतर ही मौजूद है। उसे खोजना है अर्थात् अपने भीतर ही शोधना है। परमात्मा का दर्शन हमें स्वयं के अंतर में उतरने की प्रेरणा देता है। हमारे भीतर भी परमात्मा के जैसी ही अनंतशक्ति मौजुद है, जिस प्रकार बैंक में लाखों रुपये जमा रहते हैं, परन्तु उन्हें वापस लाने के लिये नियमों की औपचारिकताऐं पूरी करनी ही पड़ती है।

यद्यपि हम कह सकते हैं कि वह रकम जब हमारी ही है तब उसे निकालने के लिये इतनी औपचारिकताऐं क्यों?परन्तु बैंक के नियमों के समक्ष हमारा तर्क थोथा ही साबित होता है। उसी प्रकार यद्यपि हमारी आत्मा के गुणों पर हमारा ही एक मात्र अधिकार है परन्तु उन्हें पाने का भगीरथ पुरुषार्थ तो करना ही होगा। एक बीज अनेक बीजों में परिवर्तित होने की क्षमता रखता है परन्तु अगर उस बीज को गोदाम के धान्य भण्डार में डाल दिया जाय तो शक्तिमान् होते हुए भी वह एक ही रहेगा। उसे गोदाम से निकालकर खेत में पहुँचा दिया जाय और फिर अनुकूल जमीन, खाद और वर्षा का योग मिले तो हजारों वृक्षों के रूप में भी परिणत हो सकता है।

आत्मा को चुनाव की स्वतंत्रता है। उसका सौभाग्य है। उसे अपना निर्माण करने की संपूर्ण स्वतंत्रता उपलब्ध हो गयी है। अब उस पर निर्भर करता है कि वह कौन-सा मार्ग चुने?विकास का या विनाश का! आधि, व्याधि और उपाधि का या इनसे हटकर समाधि का?सब हमारी अपनी इच्छा पर निर्भर करता है। अगर प्रणाली तय करलें कि मुझे समाधिमय जीवन ही जीना है तो संसार की कोई शक्ति नहीं जो उसकी स्वतंत्रता को चुनौती दे।

हमें परमात्मा दर्शन से अपने चिदानंद को देखना और जानना है।

जगतजंतु कारज रूचि रे लाल,
साधे उदये भाण रे वा.।
चिदानंद सुविलासता रे लाल,
वाधे जिनवर झाण रे, वा.।।

संसार के प्राणी प्रवृत्ति प्रधान होने से आहार, विहार आदि कार्य करना चाहते हैं, उसमें जिस प्रकार सूर्योदय सहारा होता है उसी प्रकार जिनेश्वर परमात्मा की वाणी के प्रभाव से चिदानंद में रमण करने का कार्य सिद्ध हो जाता है।

इसमें श्रीमद्जी ने मानव के मनोविज्ञान को प्रकट किया है। मनुष्य में प्रवृत्ति करने की आदत अनादिकाल से है। वह सतत प्रवृत्ति करना चाहता है और जितनी अधिक प्रवृत्ति करता है, उतना ही अधिक उसे स्वयं की ऊर्जा पर विश्वास होता है। निवृत्ति उसे पीड़ा देती है परन्तु प्रवृत्ति उसे आनंद देती है। यद्यपि प्रवृत्ति वह प्रतिपल चाहता है पर उसकी चाहत का प्रकृति साथ नहीं देती क्योंकि अधिकांशत: प्रवृत्तियों की क्रियान्विति सूर्योदय होने पर ही संभव होती है। अत: न चाहते हुए भी उसे रात्रि में प्रवृत्ति छोड़नी पड़ती है। वह सूर्योदय का इंतजार करता है। ताकि अपनी कल्पना को साकार करें।

सूर्य का आगमन मानव की कल्पना को साकार करता है ठीक उसी प्रकार परमात्मा की वाणी भी मानव को चैतन्य की ओर उन्मुख कर देती है। परमात्मा की वाणी का प्रकाश चेतना को शाश्वत आनंद के निकट पहुँचा देता है। उसका एक महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हो जाता है। संसार के अन्य सारे कार्य प्रपंच है। उन्हें सिद्ध भी कर दिया तो भी आत्मा को विश्रांति उपलब्ध करवाने में सक्षम नहीं हो सकते क्योंकि उनसे प्राणी तृप्ति नहीं पा सकते। सांसारिक या भौतिक जिन्हें हम आँखें खोलकर देख सकते हैं वे कभी चिर साथी नहीं होते। और न वे चेतना को समाधि दे सकते हैं। अत: परमात्मा की वाणी को हम हृदय के द्वार खोलकर अंतर में उतारे ताकि चैतन्य चिदानंद को उपलब्ध हो सके।

लब्धि सिद्ध मंत्राक्षरे रे लाल,
उपजे साधक संग रे वा.।
सहज अध्याय तत्वता रे लाल,
प्रगटे तत्वी रंग रे वा.।।6।।

मंत्राक्षरों में लब्धि और सिद्धि समायी हुई है परन्तु उत्तर साधक के योग होने पर ही उसकी सिद्धि हो सकती है। उसी प्रकार सहज-अध्यात्म आत्मा में मौजूद है परन्तु तत्वरंगी परमात्मा को उत्तरसाधक के रूप में प्राप्त करके जीव शिव बन जाता है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी ने साधक के साथ उत्तरसाधक की भूमिका को भी उतना ही महत्व दिया हैं इसमें स्पष्ट स्वीकार किया गया है कि मंत्राक्षर शक्तिपूर्ण होते हैं। मंत्राक्षर क्या है और वे कब शक्ति प्रदान करते हैं इसे हमें समझना है। कुल मिलाकर भाषा का निर्माण उनपचास वर्णों की वर्णमाला से होता है। प्रत्येक वर्ण का उच्चारण भिन्न-भिन्न स्थानों से होता है और प्रत्येक वर्ण से निकलती तरंगों का प्रभाव भी भिन्न-भिन्न है। कोई वर्ण किसी देवता से संबंध रखता है तो दूसरा वर्ण किसी दूसरे देवता से संबंध रखता है। किसी वर्ण की प्रकृति तामसिक है तो किसी की सात्विक! किसी वर्ण की तरंग दूरगामी है तो किसी की निकटगामी!

अब प्रश्न होता है कि इन अक्षरों से मंत्रशक्ति का निर्माण कैसे होता है?ये वर्ण जब तक अलग-अलग है, तब तक कच्चामाल है, रॉ मेटिरियल है। मंत्रविद् साधक इन वर्णों का व्यवस्थित संयोजन कर मंत्राक्षर का निर्माण करता है। अगर इनके संयोजन में जरा भी असावधानी हो जाय तो अनर्थ हो जाता है। संयोजन में एक बिंदु का भी महत्व है। कुंती पांडवों की मां है। यदि इस शब्द में बिन्दु का प्रयोग न किया जाय तो एक पशु वाचक शब्द बन जायेगा। जिस प्रकार एक वैद्य अनेक जडी बूंटियों को मिलाकर एक दवा का निर्माण करता है, वैसे ही एक मंत्रविद् शब्दों का व्यवस्थित संयोजन कर मंत्र बनाते हैं जो साधना और जप करने वाले लक्ष्य के निकट हो जाता है।

मंत्राक्षरों से युक्त प्रभावशाली मंत्र होने पर भी जब तक उसकी सिद्धि में उत्तरसाधक का योग नहीं मिलता तब तक साधना की सिद्धि नहीं होती। हमारे चैतन्य को प्रज्ज्वलित करने के लिये तत्वरंगी परमात्मा का अनुग्रह प्राप्त होता है तो तुरंत ही हमारी चेतना शुद्धता को प्राप्त कर लेती है।

(क्रमश:)

27
संस्मरण

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

पूज्य गुरुदेवश्री ने शासन प्रभावना के अनेक रचनात्मक कार्य किये। वे शिक्षा प्रेमी थे। जिस गांव में जिन मंदिर नहीं है, वहाँ जिन मंदिर की प्रेरणा देते थे। पूज्यश्री जब .... उम्र के थे तब उन्होंने अपने विचरण के लिये खान्देश को चुना। खान्देश के गांव गांव में उन्होंने विहार किया, उपदेश दिया, सार्वजनिक प्रवचनों से आम जन चेतना को जगाया। सेलंभा, खापर, अक्कलकुआं, वाण्याविहिर, तलोदा, शहादा, खेतिया, मन्नाणा, बेटावद, अमलनेर, दोंडाइचा, सारंगखेडा, नंदुरबार, धूलिया आदि क्षेत्रों में विचरण करके जन जागृति का अनूठा शंखनाद किया था।

पूज्यश्री की पावन प्रेरणा से खेतिया, शहादा, तलोदा में जिन मंदिर का निर्माण हुआ। शहादा में युवा मंडल का गठन किया। मन्नाणा में धार्मिक पाठशाला खुलवाई।

वि. सं. 2004 का खेतिया नगर में हुआ पूज्यश्री का चातुर्मास बहुत ऐतिहासिक व रचनात्मक रहा था। इस चातुर्मास में दो बडे महत्वपूर्ण कार्य हुए। ज्ञान प्रचार सभा की स्थापना तथा चौथे दादा गुरुदेव का पुण्यतिथि समारोह!

दादा गुरुदेव की पुण्यतिथि समारोह इस कारण ऐतिहासिक था कि उस सभा की अध्यक्षता बडवानी स्टेट के हिज हाइनेस श्री देवीसिंहजी सरकार ने की थी। महाराजा की पधरामणी का उस समय बहुत सांकेतिक महत्व था। उससे जिन शासन की महती प्रभावना हुई थी।

उस एक समारोह से महाराजा देवीसिंहजी पूज्यश्री के प्रति श्रद्धावान् हो गये थे। उनकी गुरु-भक्ति पूज्यश्री को संबोधित करके लिखे पत्रों से प्रकट होती है। उनके कई पत्र संग्रह में उपलब्ध है।

प्रथम श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन खान्देश के श्री संघों का सम्मेलन बुलाया जिसमें खान्देश ज्ञान प्रचार सभा की स्थापना की गई। संस्था के अध्यक्ष बने श्री माणकलालजी चौपडा, उपाध्यक्ष- श्री सुगनचंदजी मिन्नी, मंत्री- श्री जमनालालजी चौपडा, उपमंत्री- श्री इन्द्रचंदजी भंसाली, कोषाध्यक्ष- श्री भीकमचंदजी भंसाली बनाये गये। सदस्यों के रूप में श्री सुगालचंदजी बाफना, श्री करणीदानजी चौपडा, श्री जेठमलजी भंसाली, श्री रतनलालजी भंसाली, श्री मगनमलजी चौपडा, श्री मनसुखदासजी लूणिया, श्री अलसीदासजी कोचर एवं श्री कन्हैयालालजी पारख को सम्मिलित किया गया।

इस संस्था को चलाने के लिये संरक्षक, सहायक, शुभेच्छुक एवं सदस्य बनने के नकरे तय किये गये। संरक्षक का 301 रूपये, सहायक का 151 रूपये, शुभेच्छुक का 51 रूपये व मेम्बर का 21 रूपये का नकरा रखा गया था। उस पहली सभा में छह श्रावक संरक्षक बने थे। खेतिया निवासी श्री माणकलालजी चौपडा, श्री भीकमचंदजी भंसाली, श्री सुगालचंदजी बाफना, श्री व्रजलालजी पन्नालालजी अग्रवाल, तलोदा निवासी श्री गोधुलालजी सेठिया, जैन श्री संघ खेतिया संरक्षक बने थे।

श्री रेखचंदजी सेठिया तलोदा, श्री धूडमलजी पारख खेतिया, श्री जमनालालजी चोपडा खेतिया एवं श्री जीवराजजी नाहटा शहादा, श्री शामजी रामलालजी बेटावद, शा. सरेमलजी कंवरलालजी अमलनेर तथा कच्छी दशा ओसवाल संस्था पारोला ये सब सहायक बने थे।

श्री लूणकरणजी चौपडा तलोदा, श्री लाधुरामजी गुलेच्छा तलोदा, श्री जेठमलजी भंसाली खेतिया, श्री रतनलालजी भंसाली खेतिया, श्री इन्द्रचंदजी भंसाली खेतिया, श्री रामलालजी बाफना असलोद, श्री फकीरचंदजी खींवसरा असलोद, श्री दगडुलालजी कवाड मन्नाणा, श्री चाणणमलजी गुलाबचंदजी सारंगखेडा, श्री कुन्दनमलजी तेजमलजी वजाटा, श्री मनोहरमलजी अखेराजजी नाहटा शहादा, श्री जेठमलजी श्रीश्रीमाल सारंगखेडा, श्री मूलचंदजी तिलोकचंदजी काटुल, श्री पार्श्वनाथ जैन श्वे. लायब्रेरी बेटावद ये सब शुभेच्छुक बने थे।

श्री करणीदानजी चौपडा खेतिया, श्री जोगराजजी घेवरचंदजी खेतिया, श्री गुलाबचंदजी ओस्तवाल खेतिया, श्री मेघराजजी बुबकिया तलोदा, श्री खेतमलजी लूणावत तलोदा, श्री माणकलालजी लूणावत तलोदा, श्री मोतीलालजी सेठिया तलोदा, श्री भानीरामजी भीकमचंदजी मलफा, श्री पाबुदानजी लूणिया मन्नाणा, श्री राणुलालजी नाहटा शहादा, श्री नेमीचंदजी हीरालालजी नाहटा शहादा, श्री माणकलालजी नाहटा शहादा, श्री मनसुखदासजी लूणिया खेतिया, लाधुरामजी मोतीलालजी काठूड, श्री कुन्दनमलजी फूलचंदजी तलोदा, श्री तेजमालजी भीखमचंदजी सेठिया, श्री दौलतरामजी हस्तीमलजी सिरूड दीगर, श्री चंदनमलजी बुरड, श्री भीकाजी जगन्नाथसिंहजी बेटावद, श्री मलूकचंदजी हरजीवनदासजी अमलनेर, श्री भंवरलालजी बक्तावरमलजी अमलनेर ये सब सदस्य बने थे।

इस प्रकार संस्था का प्रारंभ हुआ। काफी समय तक यह संस्था सक्रिय रही थी। पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा कई पुस्तकों का प्रकाशन इस संस्था द्वारा किया गया था। ज्ञान भंडार की स्थापना भी की गई थी।

श्री खानदेश जैन ज्ञान प्रचार सभा

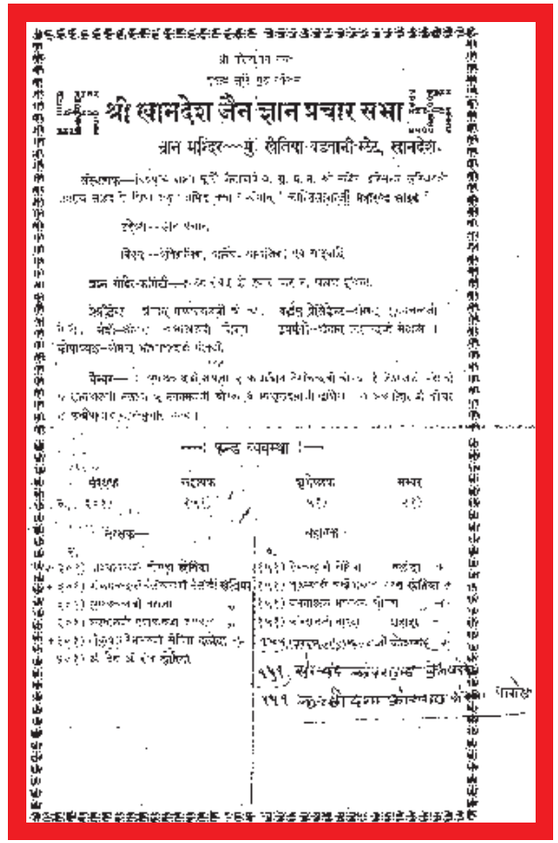

ज्ञान मन्दिर---मु. खेतिया-बडवानी-स्टेट, खानदेश.

--- फन्ड व्यवस्था ---

संरक्षक | सहायक | शुभेच्छक | मेम्बर

श्री सम्मेद शिखर पदयात्रा की सफलता के लिए जैन श्री संघ को मिला साधुवाद

पदयात्रा के प्रेरक प.पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म. आदि ठाणा-2 एवं पूज्या साध्वी श्री कमलेशकंवरजी म. आदि ठाणा-3 के नेतृत्व में पदयात्रियों एवं भक्तजनों का विशाल जत्था महासमुंद की पावन भूमि से सम्मेद शिखर महातीर्थ के लिये दिसम्बर में प्रस्थित हुआ। अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम अनुसार पदयात्रा संघ 49 वें दिन अपने गंतव्य सम्मेद शिखर तीर्थ की महान भूमि पहुंचा। यात्रा की शोभा में चार चांद तब लग गए जब पूज्या श्री मणिप्रभाश्रीजी म. की शिष्याएं पदयात्रा में सम्मिलित होने पहुंची और साध्वी पूज्या श्री मणिप्रभाश्रीजी म. स्वयं निर्माणाधीन तीर्थ ऋजुबालिका से पधारकर पदयात्रा के प्रवेश उत्सव में शामिल हुए।

30 जनवरी को सम्मेद शिखर तीर्थ में प्रवेश के पश्चात यात्रियों ने वंदन एवं पूजन का लाभ लिया। दोपहर में जैन संघ द्वारा समस्त पदयात्रियों का पदप्रक्षालन, माला, तिलक, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। समापन समारोह के दूसरे दिन पूज्य साधु जनों की निश्रा में समस्त यात्रियों ने सम्मेद शिखर की पर्वत मालाओं में स्थित तीर्थंकरों की प्रतिमाओं एवं चरण पादुकाओं के दर्शन वंदन एवं पूजन का लाभ लिया।

लगभग 27 कि.मी. की पर्वत यात्रा से वापिस लौट कर सभी ने भू-स्थल पर सांवलिया पार्श्वनाथ भगवान एवं अधिष्ठायक देव भोमियाजी महाराज के दर्शन किए। रात्रि के आनन्द मय वातावरण में भोमियाजी महाराज के सम्मुख पूरी तन्मयता एवं भावना के साथ भजन एवं भक्ति संगीत का आनंद लिया।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के लोकमान्य संत प.पू. रतनमुनिजी म.सा. ने कहा कि वह पदयात्रा श्री मनोज्ञसागरजी की दृढ़ इच्छा शक्ति एवं संकल्प का अनुपम उदाहरण है। इस यात्रा में शामिल होकर मैं और मुनिजन धन्य हो गए। इस महान आयोजन के लिए जैन संघ बधाई एवं प्रशंसा के पात्र है।

सुप्रसिद्ध साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. ने इस अवसर पर कहा कि इतनी कड़ाके की सर्दी में यह दीर्घ पदयात्रा निश्चित रूप से अतुलनीय एवं अनुमोदनीय है। दो विभिन्न परंपराओं को मानने वाले साधु साध्वियों के साथ इस पद यात्रा संघ ने पूरे भारत में जैन समाज के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

विदुषी साध्वी पू. कमलेशकंवरजी म. ने संघ समन्वय की उदार भावना को नमन करते हुए पूज्य मनोज्ञसागरजी म. एवं जैन संघ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए स्वयं को इस यात्रा में शामिल होने के लिए भाग्यशाली माना। इस अवसर पर स्थानकवासी समुदाय की ओर से साध्वी कमलेशकंवरजी ने पूज्य मनोज्ञसागरजी म. को शासन सूर्य पद से अलंकृत किया गया।

इसी अवसर पर जैन संघ महासमुंद द्वारा भी पूज्य रतनमुनिजी म. एवं पूज्य मनोज्ञसागरजी म. को पदवी से अलंकृत किया गया। दो अलग परंपराओं के बीच समन्वय के महान कार्य के लिए पूज्य रतनमुनिजी म. को गच्छ समन्वयक एवं विगत कई वर्षों से लगातार पदयात्राओं के आयोजन के लिये पूज्य मनोज्ञसागरजी म. को पदयात्रा रत्न शिरोमणि की उपाधि से विभूषित किया गया। उपाधि अलंकरण के समय उपस्थित समूचे जन समुदाय ने हर्ष ध्वनि और जयघोष के साथ इस घोषणा की अनुमोदना की। इसी क्रम में जैन संघ महासमुंद जैन सोसायटी सम्मेद शिखर तीर्थ एवं अनेक परिवार जनों ने काम्बली शॉल ओढ़ाकर समस्त साधु साध्वियों का अभिनंदन किया। विशेष बात यह रही कि पूज्य मनोज्ञसागरजी म. एवं पूज्य रतनमुनिजी म. ने अपनी अपनी ओर से एक-दूसरे को काम्बली शॉल ओढ़ाकर अभिनंदन किया।

इसी कार्यक्रम में जैन संघ महासमुंद द्वारा संघपतियों, स्वर्ण स्तंभ, एवं रजत स्तंभ के रूप में पदयात्रा संघ को आर्थिक सहयोग देने वाले सहयोगियों का माला तिलक श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह द्वारा बहुमान किया गया। बहुमान के लाभार्थी जमुना देवी निर्मलकुमार बाफना दुर्ग एवं **कुसुमकसा के प्रकाशचंद,**

शांतीबाई को चेरिया कुसुमकसा का विमोचना किया गया। इसमें से एक भजन की दमदार प्रस्तुति प्राची जैन द्वारा की गई उपस्थित जनसमुदाय मंत्र मुग्ध हो गया। बीकानेर के पारख द्वारा भी मनोज्ञसागरजी के सम्मान में भावगीत प्रस्तुत किया गया।

पदयात्रा की सफलता पूर्वक सम्पन्नता के लिए शांतिलाल लूणिया, जसराज कोचर, मूलचंद कोचर, शुभम कोचर को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। सम्पूर्ण यात्रा को व्यवस्थित आयोजित करने में अजय पींचा, भरत चोपड़ा, उमेद बाफना, शैलेन्द्र कोठारी, नीरज कोचर का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में विशेष रूप से मूलचंद लूणिया दुर्ग, सुरेश कांकरिया, संतोष बैद रायपुर एवं महासमुंद से लाल चोपड़ा, कस्तूर लुणिया, कांती कोचर, सुरेश चोपड़ा, भीखम बैद, पारस झाबक, रूपचंद गोलछा, गौतम लूणिया, राजेश लूणिया आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अरविंदभाई चौरडिया इंदौर एवं पारस चोपड़ा महासमुंद ने किया।

श्री महासमुन्द से श्री सम्मेत शिखर पद यात्रा संघ

पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्रीमज्जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म. के विद्वान शिष्य पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक गुरुदेव मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. आदि ठाणा-2 का सन् 2013 का चातुर्मास महासमुन्द (छ.ग.) में ऐतिहासिक अविस्मरणीय विशेष तप-जपादि धार्मिक-अध्यात्मिक जागृति व हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। चातुर्मास के दौरान प.पू. गुरुदेव के प्रेरणा व पावन निश्रा में महासमुन्द से श्री सम्मेतशिखर तीर्थ यात्रा हेतु भव्य पदयात्रा संघ आयोजन करने का महासमुन्द श्री संघ ने सर्वसम्मति व उल्लास मय वातावरण में निश्चय किया। महासमुन्द श्री संघ की इस ऐतिहासिक पदयात्रा संघ निकालने के निश्चय को छ.ग. राज्य के अनेक श्री संघों ने भूरि-भूरि अनुमोदना की।

महासमुन्द जैन श्रीसंघ के इतिहास में 13 दिसम्बर 2013 के शुभ मुहूर्त व पावन बेला में मुलनायक श्री शान्तिनाथ परमात्मा के जिनालय से पूज्य छ.ग. प्रवर्तक वाणी भूषण श्री रतनमुनिजी म. आदि ठाणा-5 एवं श्रमणसंघीय महासती श्री कमलेशकंवरजी म. के शुभ सानिध्य में सैकड़ों की संख्या में उपस्थित

श्रावक-श्राविकाओं के साथ शहनाई की मीठी धुन, बैंड बाजा के मधुर ध्वनि के साथ पदयात्रा संघ का मंगल शुभ प्रस्थान हुआ। महासमुन्द नगर के अनेक धर्मावलंबी समुदायों ने इस भव्य पदयात्रा संघ को भावभीनी बिदाई देते हुए प्रथम पड़ाव तक साथ रहे। चतुर्विध संघ ने महासमुन्द से 9 किमी दूर गाड़ाघाट गांव के सुरम्य वातावरण में मनमोहक व आकर्षक, रंगबिरंगी मजबूत कपड़ों से निर्मित वाराणसी नगरी में (टेन्ट में) प्रवेश कर आनन्दानुभूति की। पदयात्री पू. गुरू भगवंतों की निश्रा व मार्गदर्शन में प्रतिदिन प्रात: 4 बजे से सामायिक, प्रतिक्रमण, भक्तामर, देवदर्शन कर प्रात: 6 बजे अगले पड़ाव पहुंचने के लिए प्रस्थान करते थे। पड़ाव में (वाराणसी नगरी) प्रतिदिन 10.30 बजे से स्नात्र पूजा, आरती पश्चात् एकासन, प्रवचन श्रवण, प्रतिक्रमण, भक्तिभावना कर पदयात्री यात्रासंघ का लाभ ले रहे थे। इस पदयात्रा संघ में अनेक पदयात्री प्रथम बार धर्म से जुड़कर अपने आपको धन्यातिधन्य महसूस व हर्ष से ओतप्रोत थे।

कड़कड़ाती ठण्ड तेज शीतमय हवाओं की परवाह किए बिना वीरान जंगलों को निर्भीकतापूर्वक पार करते हुए पदयात्री अपने अगले पड़ाव पहुंचने की उत्सुकता लिए हुए प्रतिदिन आगे बढ़ते रहे। कई लोगों द्वारा कथित भ्रम व भयजनक बातों (माओवादिओं का उपद्रव, जंगली जानवरों का आक्रमण, सर्प-बिच्छू आदि जीव-जन्तुओं का भय) से निर्भीक रहकर पदयात्रियों ने सदैव पदयात्रा व धर्म आराधना का आनन्द लिया।

छ. ग. राज्य के सुप्रसिद्ध पत्थलगांव में 31 दिसम्बर को 2013 की विदाई और 2014 (नयावर्ष) का स्वागत प.पू. वाणी भूषण रतनमुनिजी म.सा. की प्रभावकारी मांगलिक श्रवण करने रायपुर, दुर्ग, महासमुन्द, दल्लीराजहरा, राजनांदगांव, बिलासपुर, कवर्धा, भिलाई, भाटापारा, बागबाहरा, कोमाखान, खरियाररोड, अहिवारा, नन्दिनी-खुन्दिनी आदि अनेक शहरों से सैकड़ों की तादाद में मंगलवाणी का लाभ श्रावक-श्राविकाओं ने लिया व नये वर्ष का भव्य स्वागत किया। 1 जनवरी 2014 को अनेक लोगों ने एक दिन पदयात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त कर आनन्दित हुए।

ता. 03.01.2014 को गुजराती जैन समाज चिरचारी द्वारा शहर में भव्य समैया हुआ तथा संघपति व पदयात्रियों का बहुमान किया। ता. 05.01.2014 को दिगम्बर समाज कुनकुरी द्वारा पू.

गुरुदेवों का भव्य नगर प्रवेश हुआ। व्याख्यानादि के पश्चात् बाहर वाराणसी नगरी तक सभी श्रावक-श्राविकाओं के साथ मंगल गीत गान करते हुए वाराणसी नगरी में प्रवेश किया। आरती आदि की बोली का लाभ व रात्रि भक्ति-भावना में सम्मिलित हुए।

पदयात्रा के दौरान छ.ग. राज्य के अनेक गांवों व शहर के लोगों ने पदयात्रा संघ का भव्य स्वागत व सम्मान-अगुवाई कर धर्मलाभ प्राप्त किया। संघ प्रेरक पूज्य गुरुदेव मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. ने इस छह री पालित पदयात्रा संघ को ''सद्भावना यात्रा'' संघ के नाम से सम्बोधित किया। पू. गुरू भगवंतों को धर्मवाणी सुनने के लिए ग्रामवासी धर्मप्रेमी जन सैकड़ों की तादाद में आते थे। रात्रि भक्ति में भी श्रद्धा के साथ भाग लिया करते थे।

महासमुन्द से यह पदयात्रा संघ छ.ग.राज्य के अनेक शहर गांव, जंगल, पहाड़, नदियां आदि दुर्गम रास्तों को पार करते हुए 29 वें दिन झारखण्ड राज्य के सीमा में प्रवेश किया।

पदयात्रा के दौरान पदयात्री गण प्रतिदिन स्नात्रपूजा आदि के पश्चात् प्रात: कालीन आरती, भक्ति, शान्ति कलश व संध्या कालीन आरती हेतु बढ़-चढ़ कर बोलियां बोलकर लाभ लेते थे। इन्दौर से सुप्रसिद्ध विधिकार व संगीतकार सरल-स्वभावी श्री अरविंदभाई चौरडिया एण्ड पार्टी द्वारा पूजा, भक्ति व मंच संचालन में श्रोताओं को झूमाते थे।

18 जनवरी 2014 को इस भव्य पदयात्रा संघ का झारखण्ड राज्य की राजधानी रॉची शहर में जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ रॉची की भावभीनी अगुवाई के मंगल वातावरण के साथ भव्य नगर प्रवेश हुआ। प्रवचन भक्ति-भावना में श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

इस तरह पदयात्रा संघ झारखण्ड राज्य के कई शहर, गांव, जंगल, कस्बों को पार करता हुआ मंजिल के नजदीक पहुंचने लगा।

श्री सम्मेतशिखर तीर्थ में पदयात्रा संघ का भव्य प्रवेश:- 30.01.2014

49 दिन तक अनवरत पदयात्रा करते हुए पदयात्रा संघ हजारों श्रद्धालुओं और समेत शिखर तीर्थ ट्रस्ट की भव्य अगुवाई के साथ तीर्थ में प्रवेश कर आनन्दित हुआ।

तीर्थ प्रवेश के समय छ.ग. राज्य में अनेक गांवों व शहरों से तथा नेपाल, मुम्बई, कोलकाता, अहमदाबाद, सुरत, नवसारी, जयपुर, जोधपुर, बाड़मेर, इन्दौर, ग्वालियर, फलौदी आदि विभिन्न क्षेत्रों से सैकड़ों की तादाद में श्रद्धालु गण उपस्थित थे।

पदयात्री व संघपति एवं अर्थ सहयोगी, भाग्यशाली गण पू. गुरुदेवों के साथ तीर्थाधिपति सांवलिया पार्श्वनाथ प्रभु जिनालय की विधिवत दर्शन-वंदन कर, तीर्थ में निर्मित प.पू. खरतरगच्छाचार्य श्री मज्जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म. के कर कमलों से प्रतिष्ठित प्राचीन दादावाड़ी के दर्शन-वंदन करके, तीर्थ के साक्षात् प्रकट प्रभावी अधिष्ठायक श्री भोमियाजी देव के दरबार में दर्शन पूजन कर भाव सुमन अर्पित किये।

30.01.2014 को दोपहर 2 बजे से चतुर्विध संघ की सानिध्यता में श्री महासमुन्द जैन श्रीसंघ द्वारा सभी पदयात्रियों व सेवाभावी कार्यकर्ताओं का भव्य स्वागत मोमेन्टो आदि प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सभी संघपति दानवीरों ''तीर्थ माला'' पहनाने की बोलियां बोली गई। दुर्ग (छ.ग.) के श्री निर्मलकुमारजी बाफना व उनके सहयोगी श्री प्रकाशचंदजी कुचेरिया कुसुमकसा (छ.ग.) ने लाभ लिया।

31.01.2014 को प्रात: 4 बजे से सभी श्रद्धालु गण व पदयात्री, संघपति परिवार पूज्य गुरुदेवों के साथ श्रद्धा भक्ति व उल्लास के वातावरण में श्री सम्मेत शिखरजी पर्वत (20 तीर्थंकरों की निर्वाण स्थली) की यात्रा की। तीर्थ पर यात्रियों की श्रद्धा उल्लास अनुमोदनीय थी।

दि. 01.02.2014 संघपति तीर्थमाल महोत्सव

तीर्थ प्रांगण में पदयात्रा संघ द्वारा निर्मित-मनमोहक सुन्दर सभागार में प्रात: 9 बजे से पूज्य गुरुदेव मुनि श्री मनोज्ञसागरजी महाराज साहब द्वारा ''संघपति तीर्थमाल'' विधि-विधान प्रारम्भ किया गया।

समारोह में प.पू. वाणी भूषण श्री रतनमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-5, विदुषी आर्यारत्ना श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. ठाणा-5 एवं स्थानकवासी श्रमण संघीय साध्वी महासती श्री कमलेशकंवरजी म.सा. ठाणा-3 विराजित थे। हजारों

श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में विधिवत् जय ध्वनि के साथ सभी संघपति परिवार व अन्य लाभार्थिओं का ''तीर्थमाल'' पहनाकर अभिनन्दन किया गया। पूज्य वाणी भूषण गुरुदेव श्री रतनमुनिजी म.सा., सेवाभावी डॉ.श्री सतीशमुनिजी म.सा. आदि गुरू भगवन्तों तथा पदयात्रा संघ के प्रेरक पू. गुरुदेव मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. व मुनि नयज्ञसागरजी म.सा. को तथा साध्वी रत्ना श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा., श्रमण संघीय साध्वी कमलेशकंवरजी म.सा. आदि को महासमुन्द जैन श्री संघ एवं सम्मेत शिखर तीर्थ ट्रस्ट मण्डल द्वारा क्रमशः कमलियां ओढ़ाई गई।

इस पदयात्रा संघ के तीर्थ प्रवेश पर मरुधर ज्याति आर्या रत्ना साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा भी पधारें। संघ समन्वय, आपसी स्नेह देखकर गदगद होते हुए उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा- दो सम्प्रदायों ने मिलकर एक अनूठा संदेश जो विश्व को दिया है कि संगठन में शक्ति है उसी प्रकार हमें भी इनका अनुकरण कर घर-परिवार के आपसी मतभेदों, संघ-समाज के आपसी कलह को मिटाकर स्नेह पूर्वक जीवन यापन कर मानव जीवन को सफल बनाना है।

सभी संघपतियों का श्री सम्मेत शिखर तीर्थट्रस्ट व श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ कोलकाता की ओर से तिलक माला, साफा से भव्य अभिन्दन किया गया।

25 जनवरी 2014
पदयात्रा संघ प्रेरक पू. गुरुदेव मुनि श्री मनोज्ञ सागर जी म.सा.
51 वें वर्ष प्रवेश भव्य अभिनन्दन समारोह

''सोने पे सुहागा'' पदयात्रा संघ के प्रेरक पूज्य गुरुदेव श्री मनोज्ञसागरजी म. का 51 वां जन्म दिवस बड़े ही उल्लास भाव से मनाया गया। विविध रंगोलियां, नद्यावर्त आदि से गुरुदेव के वाराणसी नगरी में प्रवेश पर मंगल गीत-गान हुए। जगह-जगह पर तोरण, पुष्प की सजावट से पूरा वाराणसी नगर महक उठा। देवलोक को आंखें दिखाये, ऐसे वाराणसी नगरी को देखकर ग्रामवासी भी प्रसन्न हुए। जन्म दिवस के अभिनन्दन समारोह में अनेक पदयात्रियों ने अपने भावगीत प्रस्तुत किये। बालमुनि श्री

नयज्ञसागरजी म.सा. के जन्म दिवस गीत से सभी यात्री भाव-विभोर होकर गुरुदेवजी को बधाईयां देने लगे। अनुपम अवसर के उपलक्ष्य में पूज्य गुरुदेवजी के वजन के अनुसार 80 किलो का लड्डू चढ़ाया गया। पू. गुरुदेवजी ने अपने उद्‌गार में माता-पिता तथा पू. गुरुदेव श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी के उपकारों का स्मरण कर मानव जीवन, चारित्र जीवन के सफलतम् घड़ियों व उपलब्धियों को उनके चरणों मे समर्पित करते हुए चारित्र जीवन में घटित प्रसंगों व मांगलिक प्रेरक अवसरों के बारे में चर्चा की।

पद अलंकृत

पू. गुरुदेव श्री रतनमुनिजी म. को
महासमुन्द जैन श्री संघ व उपस्थित श्रद्धालु गणों द्वारा
''संघ समन्वय शिरोमणि'' उपाधि से अलंकृत
कर गौरवान्वित हुए
तथा प.पू. गुरुदेव मुनि श्री मनोज्ञसागर जी म.सा. को
''पदयात्रा संघ शिरोमणी'' पद से
विभूषित कर अभिनन्दन किया गया।
स्थानकवासी श्रमण संघीय प.पू. गुरुदेव श्री रतनमुनिजी म.सा.
मुनिमण्डल व साध्वी रत्ना महासती श्री कमलेशकंवरजी म.सा.
व स्थानकवासी श्री संघ द्वारा पदयात्रा संघ प्रेरक प.पू.
गुरुदेव मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. को
''शासन सूर्य'' पद से अलंकृत किया गया।

देह से देवालय की ओर...

वर्तमान समय में व्यक्ति किसी भी छुट्टियों में, चाहे छुट्टियां दीपावली की हो, शीतकाल की हो, चाहे ग्रीष्मकाल की या अन्य किसी उन छुट्टियों को व्यतीत करने के लिए मनोरंजन स्थलों में घर-परिवार के सदस्यों को रिश्ते-नातेदारों को, सगे सम्बन्धियों को, मित्रों को तथा चिर-परचितों के साथ जाता है। कुछ समय, कुछ दिनों तक यह काल व्यतीत करता है यह तो केवल इन्द्रियों की कुछ समय तक की तृप्ति है जिन्हें साथ ले गये उनके मुख से स्वयं की प्रशंसा की बात हुई, अर्थ का व्यय किया गया और कलान्तर में यह बात विस्मृति में पड़ गई।

परन्तु जिसके द्वारा तन में तन्दुरस्ती आ जाए, ताजगी आ जाए, देह-देवालय-मन मंदिर बने, श्रद्धाभाव प्रगाढ़ता का रूप ले, एक दुसरे की भावना के साथ रहने का, जीने का सुअवसर प्राप्त हो, ध्यान-मौन साधना, तप जप आराधना और पैदल सामुहिक तौर पर संतों के साथ चलना यह आपको अजीबो-गरीब लगता है! परन्तु इसमें संतों मुनिवरों का साध्वी वृन्दों का सानिध्य रहा तो यह बात मनोरंजन की न रहकर आत्मरंजन की बन जाती है। प्रतिकूलताएं भी अनुकूल सी लगने लगती हैं। दु:ख सुख के समान प्रतीत होते है और सूर्योदय कब हुआ! दिन कैसे चला गया! रात कब हो गई! यह अविदित सा ही रह जाता है। इस छह री पालित यात्रा से जहॉ एक दुसरे के साथ परिचय होता है अनेक क्षेत्रों की स्पर्शना होती है वहीं दूसरी ओर संघ सेवा साधर्मिक भक्ति अनेक तीर्थ स्थलों का दर्शन-वंदन का भी लाभ मिलता है। साथ ही प्रत्येक दिन जीवन सम्बन्धित, धार्मिक-आध्यात्मिक बात सिखने सुनने को मिलती है जिससे ज्ञान की बातें हमारे भीतर में प्रविष्ट होती है। प्रकृति के साथ जीने का एहसास होता है।

आज के परिपेक्ष्य में बच्चों को सुसंस्कारित करने के धर्म प्रभावना के लिए संघ की महत्ता को रखने के लिए यह अतीत से

आज तक पुर्वाचार्यों के द्वारा विभिन्न संत मुनियों के द्वारा चली आ रही छह री पालित यात्रा एक सक्षम और सुन्दरतम् प्रयास है। और

इसी का आलम्बन लेकर छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुन्द नामक नगर से मधुबन (शिखरजी) तक की सफल एवं अद्वितीय यात्रा का आयोजन ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक वसी मलानी रत्न शिरोमणि, ओजस्वी, प्रखर वक्ता परम पूज्य श्री मनोज्ञसागरजी महाराज साहब के सान्निध्य में पूर्ण हुआ।

इस छह री पालित संघ की विशेषता यह रही की दो समुदायवर्ती साधु साध्वियों का प्रारम्भ से लेकर पूर्णाहुति (संघ समापन दिन तक) प्रत्येक क्रिया-आराधना में साथ-साथ रहना, किसी प्रकार की राग-द्वेषात्मक अथवा एक दूसरे के प्रति आलोचनात्मक बातें नहीं हुई, अपने-अपने तौर तरीके से सभी साधक-आराधक सफल आराधना करते थे। इस कारण इस यात्रा का नामकरण समन्वय-सद्भावना यात्रा रखा गया था।

ऐसी योजनाओं से ही आत्मगुणों में वृद्धि होगी, मन महकेगा, जीवन चहकेगा, विचार उन्नत होंगे, हृदय विशाल होगा, भवनाएं बलवती होगी, आपसी दूरियां सिमट जायगी। और मानवीय गुणों से परिपूर्ण होंगे, महानता का भाव प्रत्येक कार्य प्रणाली में होगा। और जिनशासन की प्रभावना करते-करते हम भी कभी न कभी परमात्मा स्वरूप में प्रकट होंगे। लेकिन आलम्बन हमें लेना होगा ऐसी परम पावन जीवन यात्राओं का। समय-समय पर आयोजन कर अपने तन-मन-धन का सदुपयोग कर लाभ लेना चाहिये। पचास दिवसीय इस आध्यात्मिक समन्वय सद्भावना यात्रा की मधुर मंगल स्मृतियां अपनी स्मृति-कोष में सजोने के साथ-साथ अनेकानेक मंगलकामनाएं। इस यात्रा के प्रखर प्रेरक एवं महासमुन्द श्री संघ को बहुविध बधाईयां।

सेवाभावी तपस्वी
डॉ. सतीश मुनिजी

व्यस्त जीवन को मस्त बनाने का उपक्रम है : पदयात्रा संघ

अनादि काल से ही भारतीय संस्कृति में अनेकानेक तीर्थंकर भगवन्तों ने प्रभावशाली दीर्घदृष्टा आचार्य भगवन्तों के अनेक ज्ञानी-ध्यानी-तपस्वी संघ हितैषी मुनिप्रवरों ने जीवन को जीवित रखने के लिए जिन-जिन सूत्रों का आश्रय स्वयं ने लिया। वे ही सूत्र जन-जन के लिए उपयोगी बन रहे, इसलिए हमें प्रदत्त किये जन उपकारी महापुरुषों को भाव से स्मरण वन्दन।

यह पावन संस्कृति प्राचीन काल से ही शाश्वत सैद्धान्तिक और आत्मवादी रहीं है। इस संस्कृति ने ज्ञान-दर्शन-चारित्र तप आदि में सम्यक्ता लाने के सारे उपक्रम साधनों के सामने रखे हैं और आचरण में आदर्शता का आधार स्तम्भ बना रहे। इसलिए चरैवेती-चरैवेती इस बेहद और बेहतर महत्वपूर्ण सूत्र का शंखनाद किया। यह सूत्र जहां जीवन में निर्मलता लाते है, विचारों में विमलता लाता है, मन में अचलता (स्थिरता) वही भटकते हुए जीवन को भगवन् प्राप्ति का पथ भी दर्शाते है। अत: जीवन शाश्वत लक्ष्य प्राप्ति जब तक हमें हासिल न हो तब तक हमें महापुरुषों के बतलाये हुए प्रशस्त मार्ग पर चलते रहना चाहिए।

बह्मसर तीर्थ के प्रेरणास्रोत वशी मालाणी रत्न शिरोमणि, तप साधना के प्रबल प्रेरक प.पू. मुनि श्री मनोज्ञसागरजी महाराज साहब ने महासमुन्द वर्षावास में एक स्वप्न संजोया था कि महासमुन्द से मधुबन तक एक पवित्र पदयात्रा कराने का। बात जिस समय संघ एवं कार्यकर्ताओं के कर्ण गोचर हुई तो सबने हर्षोल्लास के साथ स्वीकार किया। कलान्तर में ''श्रेयांसि बहु विघ्नानि'' की कहावत भी चारितार्थ होने लगी थी। लेकिन उसमें भी आप समभाव युक्त रहे, इस कारण विघ्न अपने आप हटने लगे। संघ में मजबूती आने लगी और मौन ग्यारस (150 तीर्थंकरों का जन्म कल्याणक वह परम पावन दिन) आया। प्रभात के समय अनेक संघों की श्रावक-श्राविकाओं की भक्तों की साक्षी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रस्थान कर दिया था। प्रत्येक आबाल वृद्ध का हृदय हर्ष के हिलोरे ले रहा था। सम्पूर्ण विश्व के इतिहास में यह विलक्षण और अद्‌भुत बात थी कि आज जहॉ परिवार में संघ समाज में विचारों के न मिलने के कारण अनबन, टकराव है, राग-द्वेष जन्य स्थितियां पैदा हो रही है, वहीं दो समुदाय के संतों का एक मत से, मंच से एक दीर्घ समय तक अभेदता पूर्वक एक साथ रहना। यहॉ तक कि आहार-विहार व्यवहार आदि में भी एकरूपता का साकारता पूर्वक दर्शन होना।

ऐसे समन्वय विचार वादी संतों के द्वारा ही संघ की गरिमा में चार चांद लगते हैं, संघ की शक्ति बढ़ती है। आपसी दूरियां कम होती है और तभी जन-जन को एक होने का, संगठित रहने का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत हो जाता है।

यह यात्रा प्रवृत्ति मूलक जीवन को निवृत्ति मय बना देती है। व्यस्त जीवन को मस्त बना देती है। और पवित्र भावना के साथ विहार में जिस-जिस भूमि पर कदम बढ़ाये वह भूमि और उस भूमि का कण-कण भी अपने आप पवित्र हो जाता है तो यह निशंकित होकर मान लीजिए कि जिसने इस संघ का नेतृत्व किया, स्वप्न संजोया, जिन्होंने आशीर्वाद एवं सानिध्य दिया और जिसने भाग लिया, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग दिया वे कितने गौरवशाली और सौभाग्यशाली होंगे।

ऐसे ही समन्वय परक पदयात्रा संघ सदैव सभी जगह से निकलते रहें तो जीवन में ऊर्जा का संचार होगा। और हमारा शाश्वत लक्ष्य मोक्ष तक पहुंचने का पुरुषार्थ सफल एवं साकार होगा। इस संघ यात्रा के लिए जितना लिखूं-कहूं, उतना अल्प ही लगता है। अंत में संघ के पदयात्रियों को हृदय से धन्यवाद। महासमुन्द जैन श्री संघ को साधुवाद देते हुए अपनी लेखनी को यहीं पर विराम देता हूँ।

तपस्वीरमणमुनिजीम.

अनन्त सुखों की प्राप्ति के लिए ऐसी यात्राएँ जरूरी

जिसमें उतार-चढ़ाव हो, धूप-छांव हो, संयोग-वियोग जन्य स्थितियां हो, संघर्षता के भाव उभरते हो, अपना-परायापन लगे, खट्टे-मीठे-तीखे-कड़वे-कषैले अनुभव हो, क्रिया-प्रतिक्रिया की जिसमें प्रवृत्ति हो, वह वास्तव में जीवन कहलाता है। संसार में रहने वाला प्रत्येक प्राणी स्वेच्छा पूर्वक या अनिच्छा पूर्वक ऐसा जीवन जीते हैं, व्यतीत करते है।

परन्तु जिस भूमि की महिमा, जिस भव की गरिमा, जिसे प्राप्त करने के लिए सर्व सुखों में लीन रहने वाले जितना आयुष्य बल दीर्घकाल तक का रहता है, जिन्हें कभी प्रस्वेद आता नहीं, जिनकी कभी परछाई पड़ती नहीं, गले में रहने वाली सुमन मालिका कुम्हलाती नहीं, पलकें कभी टिमटिमाती नहीं और जिनके चरण कभी भूमि टिकते नहीं, ऐसे सुर लोग भी इस धरा पर जन्म लेने के लिए सदैव अभिलाषित रहते ऐसा उत्तम मानव प्राप्त होने की कामना सदा करते है। पूर्ण सशक्त इन्द्रियां जाति सम्पन्न, कुल सम्पन्न, सुसंस्कार सम्पन्न परिवार के साथ-साथ जैन धर्म, जिनवाणी श्रवण करने के सुअवसर हमेशा प्राप्त हो ऐसी कामना रखते हैं। कारण मनुष्य सबसे उत्कृष्ट है। इस उत्तम भव से ही ज्ञान-ध्यान-तप-संयम आदि आत्मिक गुणों का संचय करते-करते कर्मों की निर्जरा करते-करते निराकार अवस्था को प्राप्त किया जा सकता है। अन्य दूसरी कोई जाति-गति स्थिति भव इस परम और चरम अवस्था को प्राप्त करे इतना आत्मिक विकास करने में असमर्थ है।

वास्तव में मनुष्य वह है जिसके भीतर में तत्वों का ज्ञान है, कर्तव्य-अकर्तव्य का भान है, हित-अहित को भली भांति जानता है, जो सदैव अपने कर्तव्य मार्ग पर अडिग रहता है। श्रद्धा समर्पण भाव से परिपूर्ण हो और मानवीय गुणों का संचार हृदय में भरा हुआ हो वह मानव है। ऐसे मानव कुल में जन्म लेने के पश्चात भी प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करने की शक्ति और स्वतंत्रता होने के बावजूद भी जो जीवन को उन्नत-क्रियागत बनाने वाले शाश्वत मूल्यों को और अनदेखी-नासमझी कर जीवन को वन में (कानन अरण्य बीहड) रूप में जीता है वह मानवता से पतित होकर पर्त और गर्त में जाता है अत: इस मानव के महत्व को उजागर करने के लिए अनेकों बार अनेकों उपक्रम की उद्‌गमता की जाती है। जिससे व्यक्ति इच्छाओं का निरोध करता है, पाप कर्मों का, आश्रव द्वारों का अवरोध करता है, पुण्य का सृजन करता है, गैरों को अपना बना देता है, मानवता उसके दिल दिमाग में गुंजायमान होने लगती है। प्रतिकारात्मक शक्तियां और प्राकृतिक प्रतिकूलतायें भी परेशान होकर परास्त हो जाती है।

ऐसी आध्यात्मिक-आत्मिक यात्रा का नाम ही शिवयात्रा है, यह कल्याण की यात्रा है। अपने आराध्य की अर्चना करने का सुन्दरतम संयोग है। और ऐसे निष्काम यात्रा से ही आत्मा निरंजन बनती है। परमात्मा के रूप में रुपान्तरित होती है। और जन्म जरा मृत्यु की दु:खमय यात्रा पर पूर्णत: विराम लग जाता है। शाश्वत-अनंत सुखों में आत्मा सदा सर्वदा के लिए विराजित हो जाती है।

ऐसी वीतराग पथ यात्रा के विरल विभूति है परम पूज्य श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. उन्हें पुन: पुन: वंदन। इस यात्रा में सम्मिलित यात्रियों का हार्दिक अभिनंदन। कार्यकर्ताओं को संघपतियों को एवं महासमुन्द श्री जैन संघ को इस समन्वय सद्‌भावना यात्रा की सफल पूर्णाहुति पर शत्-शत् साधुवाद-धन्यवाद देते हुए पुन: पुन: ऐसे उपक्रम जगह-जगह से होते रहे। प्रमोद भाव व्यक्त करते हुए अपने दो शब्दो को यहीं पर विराम...।

सुसंस्कारों का बीजारोपण है यह यात्रा

जिगर उत्कंठित जिह्वा से उच्चरित आदर्श गुणों से आचरित जिनेश्वर प्रभु की गद्यमय, पद्यमय गुणगाथाएँ-कथाएँ बार-बार प्रसंगानुसार सुनने को तो मिला करती है। परन्तु जिन पावन स्थलियों को अपना जन्म स्थान, कर्म स्थान, साधना स्थान और आत्मिक सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्ति का स्थान बनाया, जिन स्थानों की महिमा सहस्रों-सहस्रों वर्षों के व्यतीत हो जाने के पश्चात भी जनता के हृदय में पावन प्रतीक के रूप में घर कर बसी हुई है, उस निज से जिन तक पहुंचाने वाली भूमि पर पैदल यात्रा (विहार) कर चलकर आना, उन स्थानों को आंखों द्वारा निहारना, उन स्थानों के दर्शन करना, उन स्थानों के प्रति प्रत्यक्ष रूप से अहोभाव व्यक्त करना, श्रद्धार्चना प्रगट करना यह मौलिक मौका जीवन को कितना आप्लावित करता है, यह तो अनुभव करने वाला भी व्यक्त करने में असक्षम है।

तीर्थ यात्रा से जीवन आनन्दमय बन जाता है ऊर्जावन्त हो जाता है, ओजस्वी तेजस्वी हो जाता है इसका साक्षात और प्रत्यक्ष उदाहरण है परम पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक वसी मलानी रत्न शिरोमणी परम पूज्य श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. द्वारा संजोया हुआ स्वप्न साक्षात रूप से साकार हुआ और उनका यह सपना था महासमुन्द से बीस तीर्थंकर भगवन्तों की निर्वाण स्थली और अनेकानेक आत्मार्थी मुनियों ने जिस स्थान से सिद्धत्व को प्राप्त किया उस स्थान तक पैदल यात्रा (छह री पालित) संघ के साथ चतुर्विध संघ के सान्निध्य में जाने का! लाभ लेने वाले कितने परम भाग्यशाली होगें?मुझे भी गुरुकृपा से इस संघ में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। प्रत्येक यात्री की आध्यात्मिकता को गहराई पूर्वक अवलोकन करने का सुयोग भी मिला।

ऐसी मनोहरी मंगलमय यात्राओं से तन में तत्परता, तदुरूस्ती निगाहों में, निरंजन आत्माओं के साथ निकटता का भाव, मन में मधुरता, दिमाग में दिव्यता, जिगर में जिज्ञासा, कार्य में कर्तव्य दक्षता, कदमों में अपने आराध्य अर्चनीयता के प्रति करीबी, मोह से निर्मोहता की ओर बढने की भावना, आवेग और आवेश जन्य स्थिति में संवेग और प्रवृत्ति से निवृत्ति की तरफ बढने की कला का अभ्यास, प्रत्यक्ष और प्रयोगात्मक तौर पर इस यात्रा के माध्यम से हो जाता है।

साथ ही गुरू सान्निध्यता से अनेक गूढ और गहन रहस्यों को जानने का अवसर भी मिला करता है। जिससे दर्शन विशुद्धि व अज्ञान-सम्यग् ज्ञान में परिवर्तित होता है, जीवन में विनय-विवेक विकसित होने लगता है। संसार की असारता, जीवन में धर्म की, तत्वों की, व्रतों की सार्थकता महसुस होने से उसे अंगीकार करने की तमन्ना जागृत होती है। अनेक छोटे-बड़े, जाने-अनजाने, सुने-अनसुने, देखे-अनदेखे, समझे अनसमझे, चाहे-अनचाहे, प्रत्यक्ष या परोक्ष पहलुओं का मार्गदर्शन-निर्देशन यात्रा के दौरान चल रही क्रियाओं के द्वारा, वार्तालाप आदि के द्वारा, प्रवचन-शक्ति आदि के द्वारा, मधुर और सहज सरल भाषा में समय-समय पर मिलता है। जिससे जीवन गुलज़ार होता है, महक उठता है, जीवन में आने वाले संघर्षों में भी मजबूती सहर्षता पूर्वक डटे रहने की आत्मिक बल की प्राप्ति होती है। ऐसी यात्राओं से कषाय शमन, जीवन में रहे हुए दुर्गुणों का निर्गमन, इन्द्रियों का दमन और आत्म स्वरूप में रमण होता है। ऐसी आत्म हितकारी यात्राएँ नश्वरता को ईश्वरता में बदल देती है, भव्य आत्माओं को विविध शक्ति रूपों के द्वारा भवोदधि पार उतारा करती है।

इस यात्रा के दौरान प्रकृति के शीत, ग्रीष्म, वर्षा, शिशिर, पतझड़, वसन्त आदि ऋतुओं के मिजाज के साथ जीने का, रहने का, चलने का भी अलग अनुभव है। साथ ही अनेक अनुकूल-प्रतिकूल स्थान, उबड़-खाबड़ जगह, मनोनुकूल या इससे विपरीत जगहों में सबके साथ हिल मिलकर, एक-दूसरे की मनोवृत्ति को संभालकर, हंसी खुशी से रहने का मौका बड़ा आनन्द दायक लगता है। प्राकृतिक मनोरम एवं नयनाभिराम दृश्य, जंगल, वृक्ष-वल्लरी, झरने, आसमां को छूने वाले पहाड़, घाटियाँ, उतार-चढ़ाव, टेढ़े-मेढ़े मार्ग, अनेक पालतु एवं वन्य पशु-पक्षी ये सब मानों हमें सब कुछ प्रकृति के अनुरूप जीने की नसीहत दे रहे हो ऐसा प्रतीत होता है।

इसका सकारात्मक असर स्वयं के स्वास्थ्य पर जीवन की प्रत्येक क्रियाओं पर पड़ता ही है लेकिन आने वाली भावी पीढ़ी के सुसंस्कारों का बीजारोपण भी ऐसी यात्रा के कारण हो जाता है। वर्तमान समय के संदर्भ में यह यात्रा अर्थ को व्यर्थ के रूप में खर्च करने जन प्रदर्शन, धन प्रदर्शन, नाम प्रदर्शन, व्यक्ति विशेष की महत्ता या दिग्दर्शन नहीं है अपितु सुसंस्कारों का संवर्धन, संस्कृती का संरक्षण, शुभ प्रवृत्ति का निर्वहन करने की कला है। जिससे स्व परीक्षण-निरीक्षण और स्वदर्शन होता है। अतः ऐसी सद्प्रवृत्तियों के लिए तन-मन-धन लगाना सार्थक है। पुण्य का कारण है और ऐसे शुभ संचार प्रत्येक संघ के हरेक घटक के साथ जन-जन में व्याप्त हो। जिन शासन की गौरव गरिमा बढ़े। प्रभावना चहुँमुखी हो ऐसी मंगल मनीषा के साथ इस यात्रा के प्रति हार्दिक अहोभाव प्रगट करते हुए अपनी कलम के चंद शब्दों को विराम देता हूँ।

ऐतिहासिक संघ यात्रा विशेषांक

तपस्वी शुक्लमुनिजी म.

मनोभावना पूर्णता का आधार है यह यात्रा

जैन दर्शन की पवित्र परम्परा के अजस्र संवाहक अनादि काल से चौबीस तीर्थंकर ही है। इन चौबीस तीर्थंकरों में से बाईस तीर्थंकरों के च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण कल्याणक की पवित्र भूमि झारखण्ड़, उ.प्र. और बिहार राज्य में स्थित है। साथ ही इन राज्यों में अनेक कर्मवीरों ने, शूरवीरों ने, धर्मवीरों ने, दानवीरों ने बुद्धिशाली अनेकविध महात्माओं ने जन्म लिया, अपनी अनूठी-गौरवगाथा से इतिहास रचा।

यहाँ की भूमि का कण-कण कितनी अनोखी, अदभूत, ऊर्जा से ओत प्रोत होगा?कैसी पुण्यशाली यह धरा रही होगी?जिसका विस्तृत वर्णन वर्षावास काल में तीर्थंकर जीवन चरित्र का श्रवण करते हुए जगह-जगह पर आया तब ऐसी पवित्र भूमि पर विचरण करने की, दर्शन करने की भावना जागृत हुई। समय-समय पर मन रोम-रोम से रोमांचित हो उठता था। अपने आराध्य की आराधना स्थली, उपास्य की उपासना भूमि के दर्शन से जीवन में नई उमंग पाने की वहाँ की ऊर्जा से आत्मा की तृप्ति पुष्टि करने की संजोयी हुई भव्य भावना को मूर्त रूप कब मिले, कैसे प्राप्त हो?क्या यह दीर्घ काल की भावना ऐसी ही मन में रहेगी?ऐसे सवाल सदा उठते रहते थे।

भावना भव नाशिनी के अनुरूप महासमुन्द में (छत्तीसगढ़ में स्थित है) वर्षावास में विराजित परम पूज्य आत्मीय भातृ-तुल्य पूज्य मनोज्ञसागरजी म.सा. एवं वीजा ग्राम में चातुर्मास रत छत्तीसगढ़ प्रवर्त्तक महाश्रमण लोकमान्य सन्त संघ समन्वय विभूती परम पूज्य श्री रतनमुनिजी म.सा. थे। दोनों में संघ यात्रा की बातें समाचार के माध्यम से श्रावक-श्राविका एवं संघ के सदस्यों के द्वारा होती रहती थी और उसे साकारता रूप मिला तो मन बाग-बाग हो उठा। परमपूज्य गुरुदेवश्री के मुखारविन्द से जब ऐसे स्थानों पर यात्री संघ के साथ पधारने की स्वीकारोक्ति प्रदान की तो मन में उठने वाले सारे सवाल अपने आप शान्त हो गये।

अब मन उत्सुकता से भर गया और सोचने लगा कि कितनी शीघ्र वह भूमि आये, कब वो दिन, वो पल, वो लम्हें आये जिसके लिए मेरा मन मयुर सदा नाच उठता था, उद्वेलित होता था।

परम पूज्य श्री मनोज्ञसागरजी म. द्वारा संजोये हुए स्वप्न को महासमुन्द श्री संघ ने, अनेक संघपतियों ने यात्रा में चलने वाले यात्रियों ने स्वेच्छापूर्वक पूर्ण करने का दृढ़ मनोबल बना लिया है और उससे अनायास ही मेरे इस संकल्प की पूर्ति होने जा रही है। उस दिन, उस क्षण को मैं कभी भूल नहीं पाऊंगा।

आखिर मौन ग्यारस के शुभ दिन महासमुन्द से यह भव्यातिभव्य (दिनांक 13.12.2013 को)संघ निकलकर दिनांक 30.1.2014 को अपने लक्ष्य तक पहुँचा। दिनांक 31 जनवरी को सम्मेत शिखर पहाड़ पर स्थित बीस तीर्थंकरों के, गणधरों के और संयम निष्ठ आत्माओं के टूंकों के दर्शन यात्री संघ के साथ किये तो मेरा यह संकल्प पूर्ण हुआ। और दीर्घकाल की मेरी भावना साकार हुई। संघ में ब्रह्म मुहूर्त्त से नौ बजे तक का समय कैसे विहार साधना-आराधना मंगलभाव प्रवचन तथा विभिन्न ज्ञानवर्धक परिक्षाओं में व्यतीत होता था, पता ही नहीं चल पाता था।

ऐसे संघ में प्रथम बार ही चलने का मुझे सौभाग्य मिला। मैं महासमुन्द श्री संघ को, सभी संघपतियों को, तीर्थ यात्रियों को, यात्रा के प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोगियों को, कार्यकर्त्ताओं को, हृदय को धन्यवाद देते हुए पुनः पुनः ऐसे संघों का आयोजन किया जाएं ऐसी मंगल भावना के साथ मैं अपने कलम को विराम देता हूँ।

पूज्य गुरुदेव मरुधर मणि उपाध्याय प्रवर

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

के 55 वें वर्ष प्रवेश पर (दि. 15 मार्च 2014)
पर हार्दिक अभिनंदन...अभिवंदन

प्रभुवर शासन महान्, दादा जिनदत्तसूरी जी महाराज,
सभी चरित्र आत्माओं को, मेरा कोटि-कोटि नमन है आज।
गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी को, मेरा शत-शत वन्दन,
जन्म दिवस परम पाथेय का, हार्दिक-हार्दिक अभिनन्दन

शा. बाबुलाल राणामलजी लालन

अध्यक्ष,

जैन श्री संघ धोरीमन्ना (जिलो-बाडमेर)

श्रद्धांजली

पचपदरा निवासी श्री राणमलजी संखलेचा का 15 मार्च 2014 को स्वर्गवास हो गया। वे अत्यन्त श्रद्धावान् श्रावक थे। प्रतिदिन परमात्मा की पूजा, भक्ति करते थे। साधु संतों की सेवा वैयावच्च में वे सदा आगे रहते थे। पचपदरा में मंदिरमार्गी साधु साध्वियों के चातुर्मास करवाने में वे सदा प्रयत्नशील रहते थे। उन्होंने अपने जीवन में कई छह री पालित संघों में आराधना की थी। तपस्या में भी वे आगे रहते थे। वे जहाज मंदिर के माननीय ट्रस्टी थे। उनके स्वर्गवास से खरतरगच्छ संघ एवं पचपदरा समाज में बहुत बडी क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार उन्हें हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित करता है।

कुशल वाटिका बाडमेर महिला परिषद के चुनाव सम्पन्न

बाड़मेर कुशल वाटिका प्रांगण में कुशल वाटिका महिला परिषद के चुनाव एवं सपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न हुआ। प. पू. उपाध्य प्रवर गुरुदेव श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. एवं प.पू. बहन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में कुशल वाटिका महिला परिषद की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें सरक्षक नर्मदा जैन, अध्यक्ष सरिता जैन, उपाध्यक्ष चैतना धारीवाल, कोषाध्यक्ष मंजु बोहरा, सचिव उषा संकलेचा, संगीत मंत्री सीमा संकलेचा एवं हर्षा जैन को प्रचार प्रसार मंत्री के पद पर समिति द्वारा चयन किया। पू. गुरुवर्या बहन म.सा. ने परिषद के प्रति पूर्ण समर्पित होकर कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। नवीन पदाधिकारियों के साथ सभी सदस्यों ने गुरुवंदन कर पूज्य गुरुदेव श्री से मंगल पाठ का श्रवण किया। पूर्व अध्यक्ष नर्मदा जैन एवं सचिव उर्मिला जैन ने निर्वाचित सदस्य को बधाई दी।

18
श्रमण चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

श्रमण धर्म ही श्रेष्ठ है...

मुझे अपनी आत्मा का उद्धार करना है।

मुझे जन्म-मरण की परम्परा का समापन करना है।

मुझे चेतना के आनंद का रसपान करना है...

इन दिव्य विचारों में प्रतिपल रमण करता हुआ मुनि परमानंद की अनुभूति करता है।

यह दीक्षा का पंथ कितना मजेदार... कितना मस्ती भरा! न कोई तनाव... न कोई कामना...। सारी चिन्ताओं पर जैसे विराम लग गया है। पर चिन्तन जरूर है। भव-जल से तिरने, पार उतरने का चिन्तन!

जब एक साधु ध्यान-ज्ञान साधना में परमसुख का अनुभव करता है, तब एक साधु द्वारा गृहवासी बनने की प्रार्थना! उस शिथिल, उन्मार्गगामी साधु को गुरुभगवंत दशवैकालिक सूत्र द्वारा समझाते हैं- **दुल्लहे खलु भो गिहीणं धम्मे गिहवासमज्झे वसंताणं।**

दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका का यह आठवां तारक मंत्र!

अरे! मुनि! तूं घर जाने की बात कह रहा है!

साधु जीवन की उजली चद्दर को खूंटी पर टांगने का विचार कर रहा है।

वर्षों की साधना को धूमिल करने का मूर्खता भरा कदम उठा रहा है।

पहले तूं सोच... विचार कर...!

साधु जीवन में कितना आनंद है?

सबसे पहले तो दीक्षा के सफल मनोरथ का महासुख मिला! उसके बाद तो जैसे सुखों की झड़ी लग गयी...।

कायोत्सर्ग की साधना कितनी अद्वितीय! जड़ और चेतन का भेद विज्ञान! मैं और मेरे के भेद की साक्षात् अनुभूति! मैं आत्मा हूँ, देह नहीं! आत्मिक सुख अविनाशी है और भौतिक सुख नश्वर! इस परम तत्त्व की आत्मिक अनुभूति का सहजानंद!

दोनों समय अतिक्रमण के प्रतिक्रमण की साधना!

जहाँ कहीं पंच महाव्रतों एवं अन्यान्य व्रतों-उत्तरगुणों में स्खलना हुई, दोष लगा, उनकी आलोचना!

आत्म चिन्तन की रोशनी में नहाने की तो मस्ती ही अनूठी थी! **'एगोऽहं नत्थि मे कोई'** का आत्म संगीत! **'अहमिक्को खलु सुद्धो'** का परमगान। **'सुत्ता अमुणी मुणियो सया जागरेंति'** में अप्रमाद की साधना!

तुझे याद है न मुनि! जब कभी तुझसे कोई गलती हो जाती। वह अपराध तब तक तुझे चैन की सांस नहीं लेने देता, जब तक उसका इकरार गुरुमाता की गोद में नहीं हो जाता। प्रायश्चित्त के द्वारा चित्त की शुद्धि में तेरा अहोभाव कितना अद्भुत था।

नग्न पांव विहरण! कांटे चुभते, कंकर पाँव को जख्मी करते पर ये सारे कष्ट तुझे दु:खमय नहीं, परम सुखमय लगते थे क्योंकि 'तुझे तेरी आत्मा का निस्तार करना था।

मान-अपमान की परवाह किये बिना कल्पनीय, अचित्त, प्रासुक और निर्दोष गौचरी द्वारा तन-भवन को किराया देना। कभी मिलता, कभी नहीं भी मिलता। सरस, स्वादिष्ट पदार्थों में राग नहीं और नीरस, रूक्ष आहार में द्वेष नहीं। दोनों के द्वारा संयम रस का पोषण और संसार-रस का शोषण।

हे मुनि! तुझे स्वाध्याय में कितना आनंद आता था!

2000 गाथाओं का स्वाध्याय न कर लेता, तब तक मुँह में तूं पानी तक नहीं डालता था। प्रतिदिन पांच नूतन गाथाओं का कण्ठस्थीकरण! दो वक्त गुरुदेव द्वारा परमात्म-वाणी की वाचना!

वाचना द्वारा कर्णेन्द्रिय शुद्धि!

पृच्छना द्वारा रसनेन्द्रिय शुद्धि!

परावर्तना द्वारा विचार शुद्धि!

अनुप्रेक्षा द्वारा जीवन शुद्धि!

धर्मकथा द्वारा आत्म-शुद्धि!

तप में तेरा आनंद अनेरा था। पर्वतिथियों में उपवास! चातुर्मास में मासक्षमण आदि तप। ओलियों की लम्बी तपस्या द्वारा आत्म-जागरण में अभिवृद्धि! मिष्ठान्न और कडाही विगय का जीवन-पर्यन्त त्याग। दो फलों की छूट, बाकी सब त्याग।

वाह! अत्युत्तम निर्मल ध्यान से तेरी आत्मा कितनी पवित्र बनी! तेरे राग-द्वेष पतले हो गये।

पर अब ये क्या जंचा है तुझे! लगता है तेरी सद्बुद्धि का दिवाला निकल गया है। अन्यथा जप-तप, ज्ञान-ध्यान, साधना-आराधना, त्याग-वैराग के लिये अपनी सांसों को न्यौछावर करने वाला तूं यों मतिमंद और लज्जाहीन बनकर गृहस्थ के सुखों की अभ्यर्थना कभी नहीं करता।

तूंने कभी लोक-परलोक की चिन्ता की है! गृहस्थ जीवन के महापाप भव-भव में तेरे साथ चलेंगे।

तुझे अच्छी तरह पता है कि अठारह पाप स्थान का सेवन किये बिना गृहस्थ की गाड़ी चलती नहीं है।

दुकान में रिश्वतखोरी, मिलावट, कालाबाजारी, माया, प्रपंच, धोखेबाजी का आचरण!

विवाह के बाद अबह्मचर्य का महापाप!

प्रतिदिन षट्काय की विराधना!

इन पापों से तेरी आत्मा कितनी बोझिल बन जायेगी। तेरे जन्म-जरा-मृत्यु के फेरे बढ़ जायेंगे।

पर गुरुदेव! मैं घर पर भी धर्म की आराधना करूंगा। सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, प्रभु दर्शन-पूजन, प्रवचन श्रवण आदि के द्वारा आत्मा का उद्धार करूंगा।

गुरू- क्या परमात्मा ने ऐसा फरमाया है?

शिष्य- हाँ गुरुदेव! उन्होंने श्रमण और श्रावक दो धर्मों की प्ररूपणा की है। जिससे श्रमण धर्म की आराधना न हो वह श्रावक जीवन के व्रतों की साधना करे।

गुरू- पर ऐसा कहाँ लिखा है कि श्रमण धर्म को छोड़कर श्रावक धर्म की साधना करें।

शिष्य- पहले भी अनेक साधु श्रमण धर्म को छोड़कर श्रावक बने हैं।

गुरू- बने तो हैं पर उनकी दुर्गति देखो! आर्द्रकुमार ने केवल मन से दोष लगाया तो उसे अनार्य देश में जन्म लेना पड़ा। लक्ष्मणा, रूक्मी आदि की छोटी-सी भूल ने भव-भव के चक्कर बढ़ा दिये! जो एक बार जान बूझकर साधु वेश छोड़ता है, उसे जनमोजनम परमात्मा का यह अनमोल वेश नहीं मिलता। देख लो जम्बू कुमार के पूर्व भव शिवकुमार को!

शिष्य- पर छोड़कर पार भी तो हुए हैं। आर्द्रकुमार, नंदीषेण आदि के उदाहरण सामने हैं।

गुरू- मैंने पहले भी कहा था कि मजबूरी अलग चीज है और मोह अलग चीज है। उनको अन्तराय का उदय था, चरम शरीरी थे वे पर तूं तो मोहवशात् पारमेश्वरी प्रव्रज्या छोड़ रहा है। तूं क्षणिक सुखार्थी बनकर महासुख को ठोकर मार रहा है। तुझे याद है न?

नवि सुही देवता देवलोए,
न सुही पुढवी पइ राया।
न वि सुही शेठ सन्यवइए
एगंतसुही वीतरागी।

देवलोक में देवता सुखी नहीं... इन्द्र सुखी नहीं...।

अहमिन्द्र सुखी नहीं...।

बत्तीस हजार राजाधिपति चक्रवर्ती सुखी नहीं...।

वासुदेव-बलदेव सुखी नहीं...।

पृथ्वीपति राजा सुखी नहीं...।

सेठ और सेनापति भी सुखी नहीं...।

एकमात्र वीतरागी सुखी है। साधु सदैव सुखी है क्योंकि मोहजय की साधना में तत्पर है।

गुरुदेव-आनंदादि श्रावक भी गृहस्थी थे। विपुल सम्पदा थी उनके पास, फिर भी एकावतारी। यह श्रावक धर्म की साधना का पुरस्कार है। यह पुरस्कार तो मुझे भी पुरस्कार मिलेगा।

गुरु महाराज शिष्य के उपरोक्त प्रश्न को कैसे समाहित करते हैं। इसे आगामी अंक में पढेंगे। (क्रमश:)

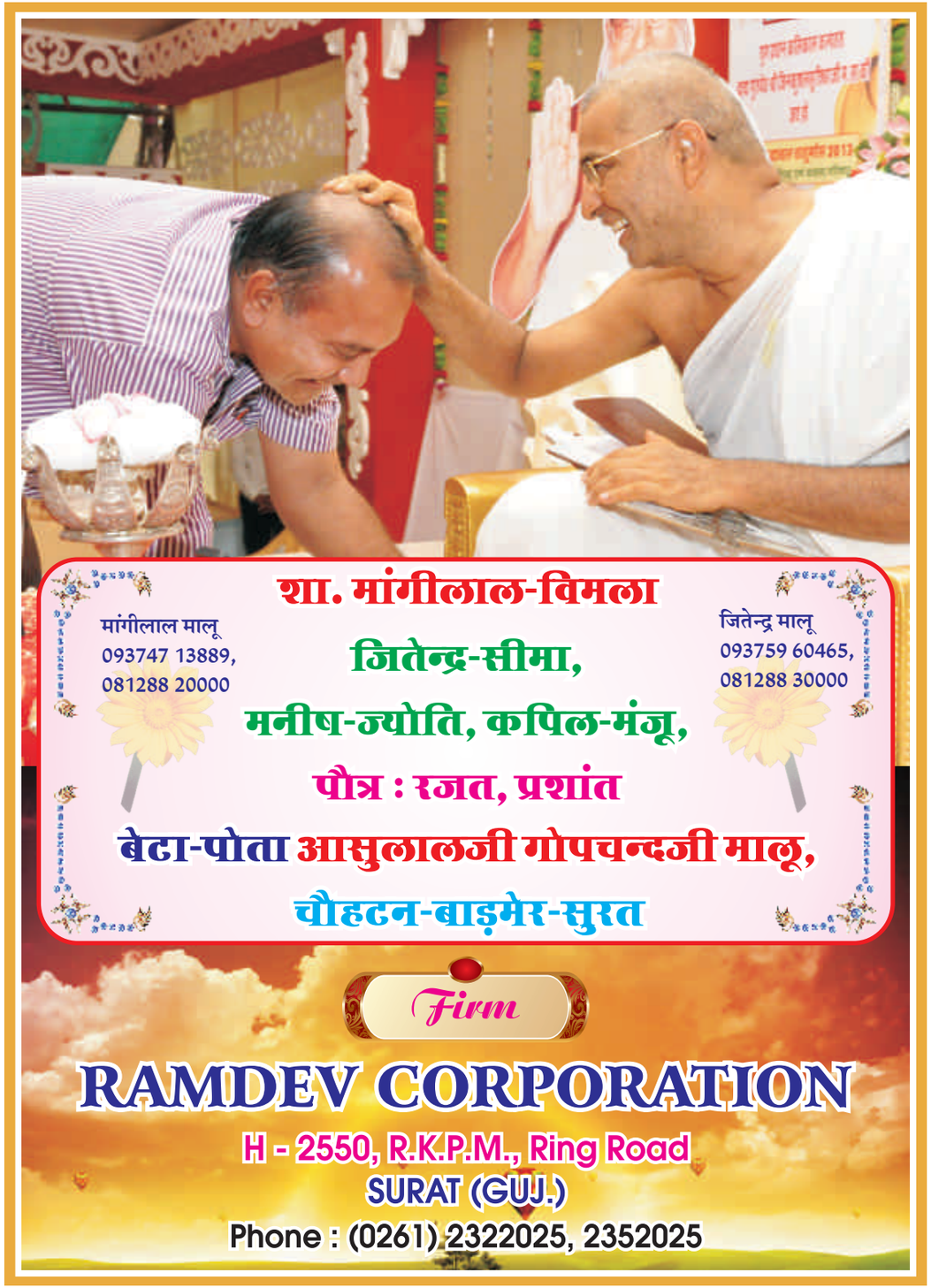

संरक्षक परिचय

श्री भंवरलालजी संखलेचा

प्रस्तुति : भूपत चौपड़ा

श्री भंवरलालजी धर्मचन्दजी संकलेचा (रासोणी) परिवार खरतरगच्छ के प्रति अटूट आस्था एवं गुरु वाक्यम् ध्येय वाक्यम् को अपने जीवन का उद्देश्य मानने वाला माननीय श्री भंवरलालजी संखलेचा परिवार जहाज मंदिर मासिक का संरक्षक सदस्य है।

दादाजी बेनमलजी रासाजी की गिनती जहाँ आचार्य जयसागरसूरिजी के परमभक्त में होती थी। वहीं पिताजी धर्मचन्दजी आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी के निष्ठावान श्रावकों में स्थान रखते थे। 21 सितम्बर 1946 को पादरू में मातुश्री सुआदेवी की कोख में भंवरलालजी को गुरू भक्ति पैतृक रूप से मिली। सुसंस्कृत एवम् उन्नत विचारों के धनी भंवरलालजी संखलेचा अपने जीवन में अनेक खरतरगच्छीय संस्थाओं से जुड़े। फलस्वरूप राजस्थान नहीं अपितु व्यावसायिक कार्यों से सुदूर दक्षिण चेन्नई में बसने के उपरान्त भी आपसे जुड़कर अनेक संस्थायें लाभान्वित हुयी। श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट मांडवला, श्री कीकाभाई प्रेमचन्द ट्रस्ट- ऋषभदेव, श्री धर्मनाथ जैन मंदिर चेन्नई, तमिलनाडू खरतरगच्छ महासंघ एवं जिनदत्त सूरि जैन मण्डल में आप अनेक पदो पर रहे।

मैट्रिक शिक्षा देते हुये भी अपने मेहनत एवं लगन का आदर्श प्रस्तुत करते हुये पुत्रों को नवनिधि एन्टरप्राईजेज नाम से आयात-निर्यात व्यवसाय में स्थापित किया।

आपका विवाह गुमानमलजी कवाड़ की सुपुत्री मोहिनीदेवी से हुआ। आपके चार पुत्र एवं दो पौत्र ललित, राजकुमार, कैलाश, गौतम, मनीष एवं मिशाल है। बड़े पुत्र ललित व्यावसायिक दृष्टि से हैदराबाद में रहते है। शेष तीनों चेन्नई प्रवासित है।

पौत्रियों में निकिता, रूचि, काजोल एवं इशिता में दादा-दादी के गुण स्पष्ट दृष्टिगोचर होते है।

जहाज मंदिर तीर्थ के एक विशिष्ट आयाम श्री दादावाडी दर्शनम् से आप जुड़े और चेन्नई में अनेक लोगों को जोड़कर सन् 2005 में पूज्य उपाध्याय प्रवर के मार्गदर्शन एवं आपके निर्देशन में एक टीम से दक्षिण भारत में लगभग 150 दादावाडियों के इतिहास के संकलन का बीड़ा उठाया। संकलन के बाद संपादन-प्रकाशन के पूर्व ही नौ मई 2008 को आप चल बसे।

भंवरलालजी को जहाँ पूज्य आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म. के प्रति निष्ठा अपने पैतृक गुणों में मिली उसे उत्तरोत्तर बढ़ाते हुये स्वयं ने उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के समर्पित श्रावकों में उच्च स्थान पाया।

भंवरलालजी को उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनीदेवी ने भी भरपूर सहयोग दिया। गुरुओं की प्रेरणा से आपके परिवार ने पालीताणा, शंखेश्वर, राणकपुर, ब्रह्मसर, नाकोड़ा, केसरियाजी के साथ-साथ चारों दादागुरु धाम की यात्रा अनेक बार की, आज भी पुत्रों की मानसिकता है कि वे स्वयं नहीं अपितु इष्ट मित्रों, निकट सम्बन्धियों को तीर्थ यात्राएं करवाने का लाभ प्राप्त करें।

(शेष पृष्ठ 34 पर)

मधुर संस्मरण

साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

मेरे बारे में मेरी अनुभूति

जिस समय ये पंक्तियां लिख रही हूँ, मैं चितलवाना से मरडिया परिवार द्वारा आयोजित संघयात्रा में हूँ। प्रवास की अवधि में इस बार संयममय वातावरण है। संसार की भोगविलास साधनों से परिपूर्ण वातावरण का त्याग कर सैंकडों पद यात्री वीतराग परमात्मा की आज्ञा को धारण कर छह 'री' का पालन कर रहे हैं।

परमात्मा महावीर के शासन का यह कितना अद्‌भुत चमत्कार है कि भोग विलास के वातावरण में भी समस्त इच्छाओं के त्याग का पुरुषार्थ हो रहा है।

नि:संदेह यह चमत्कार ही तो है कि जहाँ व्यक्ति के पास सबसे अधिक समस्या समय की है, वहाँ ये नवयुवक और युवतियाँ संघ के अन्तर्गत समस्त नियमों का पालन करते हुए दादा शंखेश्वर का नाम रटते-रटते सैंकड़ों कि.मी. की यात्रा कर रहे हैं। इनको अगर सामान्य स्थिति में कहा जाय कि आपको दो गली दूर सब्जी लेने जाना है तो ये तुरंत इंकार कर देंगे पर आज संघ में ये प्रतिदिन 15 कि.मी. का भी विहार करेंगे, 16 का भी करेंगे। साथ ही प्रतिदिन जल्दी उठना, प्रतिक्रमण, एकासणे का तप आदि अनेक नियमों का पालन भी करेंगे।

प्रभु प्रत्यक्ष नहीं है तब भी प्रभु के नाम व उनकी वाणी में ऐसे-ऐसे बड़े चमत्कार सर्जन की शक्ति है तो जब प्रभु प्रत्यक्ष थे, साक्षात् सदेह वे अपनी दिव्य वाणी का अमृत बहा रहे थे, उस समय क्या अनोखा वातावरण रहा होगा। मैं आंखें मूंदकर उस दिव्य वातावरण को अपनी आँखों के समक्ष देखने का प्रयत्न करती हूँ। दिव्य समवशरण में बिराजमान चतुर्मुख परमात्मा की वाणी के दिव्य रस को पीने का प्रयत्न करती हूँ तो हृदय जैसे भीगा-भीगा हो जाता है।

आज इस मरडिया परिवार द्वारा आयोजित संघ के अन्तर्गत संध्या समय जब पू. उपाध्यायश्री मणिप्रभजी म. ने मेरे निवेदन पर **'तारी ज्योति ने मैं जोई ज्यारे-ज्यारे'** का गुजराती भावभरा भक्तिगीत गाना शुरू किया तो मैं वास्तव में सब कुछ भूलकर भजन के शब्दों में डूब गयी।

नि:संदेह इस भजन के भाव अनूठे है। यद्यपि प्रत्येक गीत अनूठा ही होता है पर कुछ गीत तो जैसे बेसुध ही कर देते है। उनके शब्द, उनके भाव और सबसे बड़ी बात... उनको गाने का अंदाज। जब किसी भक्ति गीत का तराना उपाध्यायश्री छेड़ते है तो ऐसा लगता है सारा संसार, संसार की हर गतिविधि थम सी गयी है। इसलिये नहीं कि वे बहुत मीठा गाते है। सच तो यह है कि उनसे भी अधिक मीठा और सुरीला कईजन गाते हैं पर हृदय को नहीं छू पाते। उपाध्यायश्री जब गाते हैं तो उनके मात्र होंठ ही नहीं हिलते बल्कि उनके हृदय की भक्ति साकार हो उठती है। उनके शब्द गले से नहीं बल्कि ठेठ नाभि से प्रकट होते हैं। चूंकि भक्ति की धारा उनके रोम-रोम से बहती है अत: वह जब श्रद्धालु भक्तमंडली के कानों से टकराती है तो ऐसा लगता है जैसे कोई मीठा झरणा पहाडी से प्रकट होकर धरती पर आ रहा है।

इसी कारण भक्तियोग को प्रभु मिलन का सबसे आसान योग माना गया है। स्वयं को प्रभु के चरणों में सौंप दें तो नि:संदेह हम शून्य से सिद्धत्व की गरिमा प्राप्त कर सकते हैं पर आवश्यकता है समर्पित होने की।

हमारे जीवन की विडम्बना है कि हम उपवास कर सकते हैं, सामायिक ले सकते हैं, उपधान भी कर सकते हैं। यद्यपि धर्मक्रिया भी पुण्य से ही उदय में आती है, यह बात सत्य है पर यह जांचना भी तो हमारा कर्त्तव्य है कि इस क्रिया का परिणाम जीवन में क्या आया?

एक बीमार व्यक्ति डॉक्टर से उपचार लेता है। लगातार एक माह संपूर्ण पथ्य और औषध स्वीकार करता है परन्तु सब कुछ करने के बावजूद अगर परिणाम प्राप्त नहीं होता तो डॉक्टर तुरंत बदल दिया जाता है। क्या यह स्थिति हमें अपने जीवन में लागू नहीं करनी चाहिए?लगातार वर्षों तक आराधना करने पर भी अगर परिणाम शून्य है तो अवश्य चिंतन करना चाहिए कि त्रुटि कहां है?

नि:संदेह जीवन में भावशुद्धि आनी चाहिए और यही साधना का परिणाम है। यह भावशुद्धि द्रव्यशुद्धि के साथ भी आ सकती है और कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जीवन संसारी का होते हुए भी स्वाभाविक भावों की निर्मलता भी प्रकट हो सकती है।

मैंने अपने जीवन में अनेक ऐसे लोग देखे हैं जिनकी प्रज्ञा अत्यंत पैनी होते हुए भी हृदय की सरलता में वे बच्चों की सरलता को भी मात करते हैं। मैं अपने अग्रज को ही देखूं। वे प्रखर प्रतिभाशाली, परम प्रभावी होते हुए भी सरलता एवं सहजता की जीवंत प्रतिमा है। उनकी सरलता उनके प्रत्येक व्यवहार से टपकती है। मैं गतवर्ष की घटना का ही उल्लेख करूं।

पादरू में उनके जन्म दिन का भव्य आयोजन था। कार्यक्रम के पश्चात् दोपहर मैं एवं कई श्रावकगण वहां उपस्थित थे। इतने में एक वृद्ध श्राविका, जो नितांत अपरिचित थी, वहाँ दर्शनार्थ पहुंची। उसने वंदन के पश्चात् संवाद करते हुए अपने परिचित एक साध्वीजी भगवंत के विहार क्षेत्र की जानकारी पूछी। पू. गुरुदेव ने अत्यंत मीठास से उत्तर दिया। एक श्राविका ने एक अन्य महाराज की जानकारी पूछी। पूज्यवर ने वह भी दी। उस श्राविका ने एक और महाराज की जानकारी पूछी।

मेरे एवं अन्यों के चेहरों पर इस प्रश्नावली से थोड़ी खिन्नता....हल्का सा तनाव.... हल्की सी झुंझलाहट प्रकट हो रही थी। पर उपाध्याय के चेहरे पर वही निर्दोष मुस्कान थी।

यद्यपि बाद में मुझे भी लगा कि यही तो साधना का परिणाम है। सच तो यह है कि हम वर्षों की क्रिया के बाद भी खुद से यह पूछने का साहस नहीं कर पाते कि इस क्रिया ने मुझे दिया क्या है? नहीं अगर दिया है तो क्यों? साधक को इन प्रश्नों से अपना अंतर्मन टटोलना जरूरी है।

कितने है निर्मल पावन, ये दर्शन गुरुदेव के...
सुन्दर बड़े मन भावन, ये दर्शन गुरुदेव के...
गुरु दर्शन का फल सुखदायी, लाभ उठा लो मेरे भाई...
महकाए घर और आँगन, ये दर्शन गुरुदेव के...
ऋतु है जगत ये गुरु दर्शन की, प्यास बुझा लो इन नैनन की,
भक्तों को करते धन-धन, ये दर्शन गुरुदेव के...

पूज्य गुरुदेव मरुधर मणि उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
के 55 वें वर्ष प्रवेश पर (दि. 15 मार्च 2014)
पर हार्दिक अभिनंदन...अभिवंदन

शा. भंवरलाल विरधीचंदजी छाजेड
अध्यक्ष,
श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम संस्थान,
कुशल वाटिका बाडमेर

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

मई महिने का पंचांग

पंचांग

Panchang of May Month

MAY 2014

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मई मास	पाक्षिक प्रतिक्रमण- 13.5.14 एवं 27.5.14 रोहिणी- 02.5.14 एवं 29.5.14, ज्येष्ठ वदि 8 का क्षय			1 वैशाख सुदि 2	2 वैशाख सुदि 3	3 वैशाख सुदि 4
4 वैशाख सुदि 5	5 वैशाख सुदि 6	6 वैशाख सुदि 7	7 वैशाख सुदि 8	8 वैशाख सुदि 9	9 वैशाख सुदि 10	10 वैशाख सुदि 11
11 वैशाख सुदि 12	12 वैशाख सुदि 13	13 वैशाख सुदि 14	14 वैशाख सुदि 15	15 ज्येष्ठ वदि 1	16 ज्येष्ठ वदि 2	17 ज्येष्ठ वदि 3
18 ज्येष्ठ वदि 4	19 ज्येष्ठ वदि 5	20 ज्येष्ठ वदि 6	21 ज्येष्ठ वदि 7/8	22 ज्येष्ठ वदि 9	23 ज्येष्ठ वदि 10	24 ज्येष्ठ वदि 11
25 ज्येष्ठ वदि 12	26 ज्येष्ठ वदि 13	27 ज्येष्ठ वदि 14	28 ज्येष्ठ वदि 30	29 ज्येष्ठ सुदि 1	30 ज्येष्ठ सुदि 2	31 ज्येष्ठ सुदि 3

(शेष पृष्ठ 31 का)

संरक्षक परिचय

प्रत्येक चातुर्मास में अपने गुरू उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म. के दर्शन एवं लगभग प्रतिवर्ष मालपुरा की यात्रा करने वाले माननीय भंवरलालजी आज हमारे बीच नहीं हैं परन्तु परिवार की परम्परा व पुत्रों को दिये गये संस्कारो के अनुरूप पूरा परिवार खरतरगच्छ एवं उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म. के प्रति विशिष्ट आस्था रखता है।

बड़े पुत्र ललितकुमार ने उपाध्याय प्रवर के हैदराबाद चातुर्मास में जहां विशेष लाभ लिया। वहीं मंझले पुत्र कैलाशकुमार पिताश्री के जीवन काल में पूरे न हो सके दादावाड़ी दर्शनम् के कार्य को पूरा करने के लिये दृढ़ संकल्पित है। कैलाशजी वर्तमान में श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट में प्रचार-प्रसार मंत्री का दायित्व निर्वहन कर रहे है। साथ ही पैतृक गांव पादरू में श्री शीतलनाथ जिनालय एवं जिनकुशल सूरि ट्रस्ट के उपाध्यक्ष का दायित्व भी आप के पास है। वहीं द्वितीय पुत्र राजकुमार सिवान्ची जैन युवा संगठन के अध्यक्ष का दायित्व संभालते हुये मात्र मूर्तिपूजक ही नही अपितु सर्वगच्छों से जुड़े हुये है। सबसे छोटे पुत्र गौतम भी महानगरीय जीवन शैली में व्यावसायिक व्यस्तताओं के बावजूद यदि मारवाड़ से कोई चेन्नई प्रवास कर आता है तो उसे स्थानीय सुविधाएं उपलब्ध करवाने में कमी नहीं आने देते।

मातुश्री मोहिनीदेवी के मार्गदर्शन में परिवार की भावना यही है कि पैतृक रूप से मिले गुणों में दिन-दुनी रात चौगुनी वृद्धि हो एवं खरतरगच्छीय परम्परा एवं गुरू निष्ठा में कभी कमी न आवे।

कलिकाल केवली श्री जिनचन्द्रसूरि आचार्य पदारोहण	वैशाख सुदि 3-1341	श्री जिनआनंद सागरसूरि दीक्षा	वैशाख सुदि 12-1968
अक्षय तृतीया, वर्षीतप पारणा	वैशाख सुदि 3	श्री अजितनाथ च्यवन कल्याणक	वैशाख सुदि 13
श्री अभिनंदनस्वामी च्यवन क.	वैशाख सुदि 4	श्री जिनपद्मसूरि स्वर्गवास	वैशाख सुदि 14-1400
मणिधारी जिनचन्द्रसूरि आचार्य पद	वैशाख सुदि 6-1205	श्री जिनसागरसूरि स्वर्गवास	ज्येष्ठ वदि 3-1719
श्री धर्मनाथ च्यवन कल्याणक	वैशाख सुदि 7	श्री श्रेयांसनाथ च्यवन कल्याणक	ज्येष्ठ वदि 6
श्री अभिनन्दन स्वामी मोक्ष कल्याणक	वैशाख सुदि 8	श्री सिद्धाचल तीर्थ वर्षगांठ	ज्येष्ठ वदि 6
श्री सुमतिनाथ जन्म कल्याणक	वैशाख सुदि 8	श्री मुनिसुव्रत स्वामी जन्म कल्याणक	ज्येष्ठ वदि 8
श्री सुमतिनाथ दीक्षा कल्याणक	वैशाख सुदि 9	श्री मुनिसुव्रतस्वामी मोक्ष कल्याणक	ज्येष्ठ वदि 9
श्री महावीरस्वामी केवलज्ञान कल्याणक	वैशाख सुदि 10	श्री जिनकुशलसूरि आचार्य पद	ज्येष्ठ वदि 11-1377
शासन स्थापना	वैशाख सुदि 11	श्री शान्तिनाथ जन्म मोक्ष कल्याणक	ज्येष्ठ वदि 13
श्री जिनप्रबोधसूरि स्वर्गवास	वैशाख सुदि 11-1341	श्री शान्तिनाथ दीक्षा कल्याणक	ज्येष्ठ वदि 14
श्री विमलनाथ च्यवन कल्याणक	वैशाख सुदि 12	कलिकाल केवली जिनचन्द्रसूरि दीक्षा	ज्येष्ठ सुदि 3-1332

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. जहाज मंदिर मांडवला में बिराज रहे हैं। वे अप्रेल के प्रथम सप्ताह में विहार कर भंवरानी, रामा होते हुए नोरवा स्थित जिनकुशल हेम विहार धाम पधारेंगे। वहाँ से समदडी, कल्याणपुर होते हुए 11 अप्रेल को आगोलाई में प्रवेश करेंगे।

वहाँ ता. 16 अप्रेल को प्रतिष्ठा करवाकर ता. 17 को जोधपुर की ओर विहार करेंगे। ता. 19 व 20 अप्रेल जोधपुर में बिराजेंगे। ता. 21 को विहार कर भोपालगढ पधारेंगे। वहाँ दो दिनों की स्थिरता कर पीपाड होते हुए ता. 26 को बिलाडा पधारेंगे। वहाँ श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा हाला वालों द्वारा आयोजित संघ यात्रा प्रवास को एक दिवसीय अपनी निश्रा प्रदान करेंगे।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री जैतारण होते हुए रायपुर पधारेंगे। वहाँ से सोजत, मारवाड जंक्शन, सोमेसर होते हुए ता. 2 मई 2014 को अक्षय तृतीया के दिन श्री डुठारिया नगर में प्रवेश करेंगे। वहाँ ता. 11 मई को अंजनशलाका प्रतिष्ठा करवाकर उदयपुर, केशरियाजी होते हुए मई के चतुर्थ सप्ताह के प्रारंभ में अहमदाबाद पधारेंगे।

संपर्क सूत्र-

पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.
द्वारा बाबुलाल लूणिया C/o महावीर ट्रेडिंग कम्पनी
5, श्रेयस इन्ड. एस्टेट, सोनारिया ब्लॉक के सामन, जनरल हॉस्पिटल रोड़,
बापु नगर, अहमदाबाद-380021 (गुज.)
संपर्क - 098251 05823, 097843 26130 (मुकेश)

समाचार दर्शन

जलगांव में चातुर्मास

पूजनीया खान्देश शिरोमणि गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास जलगांव में होना निश्चित किया गया है।

श्री शंखेश्वर महातीर्थ पर चितलवाना संघ के प्रवेश समारोह पर जलगांव श्री संघ ने पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. से उनके चातुर्मास की विनंती की। द्रव्य क्षेत्र काल भाव के आगार रखते हुए जलगांव चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की। उनके चातुर्मास की स्वीकृति से जलगांव श्री संघ में आनंद व हर्ष का वातावरण छा गया। पूज्याश्री अभी खान्देश में विहार कर रहे हैं। उनकी प्रेरणा से नाशिक-इन्दौर मुख्य मार्ग पर नाशिक से 8 कि.मी. की दूरी पर आडगांव में भव्य विहार धाम का निर्माण हुआ है। जिसमें कच्छपासन बिराजमान श्री मुनिसुव्रतस्वामी परमात्मा का मंदिर, जिनकुशलसूरि दादावाडी, उपाश्रय, भोजनशाला, धर्मशाला आदि बने हैं। जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा में ता. 18 जून 2014 को संपन्न होगी।

आचार्य चन्दनाजी आगोलाई पधारे

वीरायतन राजगृह के आचार्य श्री चन्दनाजी अपनी शिष्या श्री शिलापीजी आदि सतियों के साथ जैसलमेर, बाडमेर, नाकोडाजी होते हुए पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. से वार्तालाप करने व मिलने आगोलाई पधारे। पूज्यश्री को शाता पूछते हुए उन्हें वीरायतन द्वारा चल रही शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि पूरे भारत में हर तीर्थ स्थान पर स्कूल खोलने का हमारा संकल्प है। कुल मिलाकर 200 विद्यालय खोलने हैं। कुशल वाटिका प्रकल्प की प्रशंसा करते हुए कहा- इस तीर्थ पर आकर परम शांति का अनुभव होता है। वहाँ चल रहे विद्यालय का अवलोकन कर प्रसन्नता व्यक्त की।

पुरानी स्मृतियों को ताजा करते हुए पूज्यश्री ने कहा- राजगृही के वीरायतन में पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री के साथ मेरा आना हुआ था। पूज्य गुरुदेवश्री के साथ पूज्य उपाध्याय श्री अमरमुनिजी म.सा. के बहुत मधुर संबंध थे।

आचार्य चन्दनाजी ने भी उन दिनों की स्मृतियाँ ताजा की। पूज्यश्री ने कहा- आचार्य श्री चन्दनाजी जैन धर्म के प्रचार प्रसार, शिक्षा और सेवा के क्षेत्र में अनुमोदनीय रचनात्मक कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने पूज्यश्री को बिहार प्रान्त में पधारने का निवेदन करते हुए राजगृही वीरायतन में बन रहे श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा कराने हेतु आग्रह किया। पूज्यश्री ने कहा- उधर विहार का मेरा भाव है ही। गुणायाजी आना ही है।

बाडमेर कल्याणपुरा प्रतिष्ठा संपन्न

बाडमेर नगर के हृदय स्थल कल्याणपुरा में श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. आदि मुनि मंडल की पावन निश्रा एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री सिद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म. सा. पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा. आदि की पावन सानिध्यता में अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

कल्याणपुरा में पार्श्वनाथ परमात्मा का यह मंदिर लगभग 60 वर्ष पुराना है। श्री ऊकचंदजी बोथरा के सुपुत्र श्री आदमलजी बोथरा परिवार की ओर से इस मंदिर का निर्माण करवाया गया था।

कल्याणपुरा के उपाश्रय में पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. लगभग 2 वर्ष ठाणापति के रूप में बिराजे। यहीं पर उनका परमात्मा पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म कल्याणक के दिन पौष वदि 10 को स्वर्गवास हुआ। उनकी पावन स्मृति में उनकी शिष्या पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से पार्श्वनाथ मंदिर के पास ही श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी का निर्माण हुआ।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के मार्गदर्शन में इस मंदिर का पूरा आमूलचूल जीर्णोद्धार करवाया गया। जिन मंदिर में परमात्मा का उत्थापन विधान पूज्य गुरुदेवश्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में ता. 27 अप्रेल 2011 को करके चल प्रतिष्ठा की गई थी।

ता. 29 अक्टूबर 2011 को पूज्य आचार्य श्री कलाप्रभसागरसूरिजी म.सा. एवं पू. साध्वी श्री संयमनिधिश्रीजी म.

बाड़मेर कल्याणपुरा प्रतिष्ठा

की निश्रा में भूमिपूजन एवं खातमुहूर्त्त संपन्न हुआ था। ता. 10 फरवरी 2012 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि की निश्रा में शिलान्यास का मुहूर्त्त संपन्न हुआ था।

प्रतिष्ठा महोत्सव का कार्यक्रम ता. 26 फरवरी 2014 को पूज्यश्री के मंगल नगर प्रवेश के साथ प्रारंभ हुआ। ता. 28 फरवरी को कुंभ स्थापनादि विधि विधान हुए। लगातार चार दिनों तक विधि विधान एवं परमात्मा के पंच कल्याणकों की उजवणी की गई। ता. 4 मार्च को भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ।

इस शोभायात्रा ने एक वर्ष पहले कुशल वाटिका की प्रतिष्ठा की ऐतिहासिक शोभायात्रा की यादें ताजी कर दी। ता. 5 मार्च 2014 को परमात्मा की भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा संपन्न हुई। कल्याणपुरा मंदिर के अध्यक्ष श्री बाबुलालजी सेठिया का ट्रस्ट मंडल की ओर से अभिनंदन पत्र द्वारा बहुमान किया गया। प्रतिष्ठा के बाद सियाणी में दीक्षित नूतन साध्वी श्री दर्शनांजनाश्रीजी म. की बडी दीक्षा संपन्न हुई। लाभार्थियों का अभिनंदन किया गया।

मुंबई से पधारे संगीत सम्राट् श्री नरेन्द्रभाई वाणीगोता ने अपनी मधुर आवाज व दिलकश संगीत से अनूठा रंग जमाया। छप्पन दिक्कुमारिकाओं को तैयार करने में कुशल वाटिका महिला परिषद् का योगदान रहा। पात्रों की तैयारी में सुश्री नीलम जैन जैसलमेर की मेहनत रही।

शोभायात्रा के संचालन में शहर के विविध युवा मंडलों का पूरा योगदान रहा। प्रतिष्ठा महोत्सव में सकल संघ व प्रशासन का पूरा पूरा योगदान रहा।

शहर विधायक श्री मेवारामजी जैन, नगरपालिका चेयरमेन श्रीमती ऊषा वडेरा आदि का पूरा योगदान रहा।

ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बाबुलालजी सेठिया, उपाध्यक्ष श्री रतनजी वडेरा, महामंत्री श्री संपतमलजी बोथरा, निर्माण समिति के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी छाजेड, प्रतिष्ठा महोत्सव समिति के संयोजक श्री मांगीलालजी वडेरा, सहसंयोजक श्री सज्जनराजजी मेहता, कुशल वाटिका युवा परिषद् आदि के पूरी मेहनत से ही प्रतिष्ठा महोत्सव को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई।

प्रतिष्ठा महोत्सव के पश्चात् ट्रस्ट मंडल द्वारा पूज्यश्री का गुरुपूजन किया गया व कामली ओढाई गई। ता. 6 मार्च को द्वारोद्घाटन किया गया। सतरह भेदी पूजा व दादा गुरुदेव की पूजा के साथ ही प्रतिष्ठा महोत्सव का मंगल समापन हुआ।

प्रतिष्ठा लाभार्थी

ध्वजा का लाभ उसी सेठिया परिवार ने विशाल राशि अर्पण कर लिया, जिन्होंने 60 वर्ष पहले ध्वजा का लाभ लिया था। धोरीमन्ना निवासी शा. प्रतापमलजी मालचंदजी रांका सेठिया परिवार हस्ते महेन्द्र सेठिया ने ध्वजा चढाई।

स्वर्ण कलश- श्री नेमीचंदजी मोहनलालजी पारसमलजी विजयकुमारजी धारीवाल चवा वाले

मूलनायक श्री पार्श्वनाथ बिराजमान- श्री बंशीधरजी बाबुलालजी सेठिया बेटा पोता श्री भगवानदासजी सेठिया चौहटन वाले

श्री आदिनाथ बिराजमान- श्री आसुलालजी शंकरलालजी भंवरलालजी छाजेड हरसाणी वाले

श्री महावीर स्वामी बिराजमान- श्री मांगीलालजी रतनलालजी वडेरा ठेकेदार, बाडमेर

श्री पद्मप्रभस्वामी बिराजमान- श्री हस्तीमलजी खीमराजजी बोथरा दिल्ली वाले

श्री सीमंधरस्वामी बिराजमान- श्री भंवरलालजी अशोककुमारजी सेठिया, बाडमेर

श्री गौतमस्वामी बिराजमान- श्री लूणकरणजी ताराचंदजी बोथरा बिशाला वाले

श्री पुण्डरिक स्वामी बिराजमान- संपतराजजी माणकमलजी वडेरा बालोतरा

श्री नाकोडा भैरव बिराजमान- श्रीमान जांवतराजजी जसराजजी प्रतापमलजी रांका सेठिया धोरीमना हस्ते चन्दनमल जी

श्री पद्मावती देवी विराजमान- श्रीमती ढेलीदेवी रिखबदासजी वडेरा

श्री प्रासाददेवी महालक्ष्मी विराजमान- श्रीमान बंशीधर जी बाबुलाल जी सेठिया चौहटन वाले

रंगमंडप स्वर्ण कलश- श्रीमान बाबुलालजी मांगीलालजी संखलेचा बेटापोता राणामलजी झिंझनियाली वाले

सभामंडप पर स्वर्ण कलश- श्रीमान मोहनलालजी मांगीलालजी किशोरजी धनराजजी बोथरा हस्ते मोहनजी

शृंगारचौकी पर स्वर्ण कलश- श्रीमान छगनलालजी माणकमलजी हजारीमलजी बोथरा हस्ते छगनजी

बाड़मेर कल्याणपुरा प्रतिष्ठा

गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी के जन्मोत्सव पर उमड़े गुरूभक्त

श्री जिनकान्तिसागरसूरि आराधना भवन में पूज्य गुरूदेव मरुधर मणि उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म. के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित गुरु भक्ति समारोह में लोगों ने उत्साह से भाग लिया। पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. ने कहा कि गुरूदेव ने पूरे भारत वर्ष में कई जीर्णोद्धार व प्रतिष्ठाएं व दीक्षाएं करवाई। मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. ने अपने जीवन के संस्मरण सुनाते हुये गुरू की महत्ता पर प्रकाश डाला एवं उनके उपकारों का वर्णन कर दीर्घायु की कामना की।

साध्वी सिद्धांजनाश्रीजी ने गुरूदेव को युग पुरूष व शासन सेवा में कार्यदक्ष कहा। साध्वी नीतिप्रज्ञाश्रीजी ने गुरुदेव के जन्मोत्सव पर सदाचार एवं संस्कारों पर चलने की बात कही। साध्वी अमृतांजनाश्रीजी, सौम्यांजनाश्रीजी, दर्शनांजनाश्रीजी ने भी गुरूदेव के जन्मोत्सव पर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में कुशल वाटिका महिला परिषद् की अध्यक्षा सविता मेहता व सीमा जैन ने, भावना संकलेचा एवं जगदीश सिंघवी ने बधाई गीत गाया। कुशल वाटिका ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी छाजेड़ ने गुरुदेव को जन्म की बधाई देते हुये शासनदेव से उनके उत्तरोत्तर प्रगति की कामना की। गुरुभक्त रमेश मालू ने गुरुदेव को जन्म दिवस पर बधाई देते हुये कहा कि मेरी श्रद्धा के गुरुदेव हजारों वर्ष इसी प्रकार शासन की सेवा करते रहे। कुशल वाटिका ट्रस्ट के प्रचार मंत्री केवलचन्द छाजेड. ने गुरूदेव के जीवन से सीख लेने की प्रेरणा दी। धर्मनिष्ठ श्रावक रणजीतमलजी मालू, मेवारामजी मालानी, बाबूलालजी सेठिया, सज्जनराज मेहता, मांगीलाल मालू, नर्बदा जैन, उषा संखलेचा, बाबुलाल छाजेड एवं भूरचंद संखलेचा आदि ने भी गुरुदेव की अदभुत शासन प्रभावना की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन पवन संकलेचा ने किया।

फल वितरण कार्यक्रम आयोजित हुआ

55 वें जन्म दिवस के उपलक्ष में राजकीय चिकित्सालय बाड़मेर में कुशल वाटिका युवा परिषद द्वारा मरीजों को फल व बिस्किट वितरण कर मानव सेवा का कार्य कर गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा के दीर्घायु होने की कामना की। इस अवसर पर अध्यक्ष केवलचन्द छाजेड़, कोषाध्यक्ष राजेन्द्र वडेरा, प्रचार मंत्री सुनिल छाजेड, नरेश लूणिया, गौतमचन्द मालू, भूरचन्द श्रीश्रीमाल, प्रकाश पारख, सुनिल बोथरा, कपिल मालू आदि सदस्य उपस्थित थे। फल व बिस्किट वितरण लाभार्थी बाबुलालजी जगदीशचन्दजी पुत्र श्री भूरचन्दजी लूणिया परिवार के सहयोग से किया गया।

प्रेषक- केवलचंद छाजेड

समाचार दर्शन

श्री सुधीरजी लोढा का बहुमान

बाडमेर कल्याणपुरा में चल रहे श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव के दौरान ता. 5 मार्च 2014 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग के माननीय सदस्य श्री सुधीरजी लोढा का भव्य स्वागत किया गया।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेवश्री ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा- श्री सुधीरजी लोढा ने छोटी उम्र में आयोग के सदस्य के रूप में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। वे हमारे समाज व गच्छ के गौरव है। मैं चाहता हूँ कि वे अपनी दिव्य प्रतिभा एवं प्रज्ञा का उपयोग कर सत्ता के शिखर तक पहुँचे।

उन्होंने कहा- जैन समाज को ऐसी प्रतिभाओं से बहुत आशाऐं हैं। समाज को आगे बढाने, समाज की समस्याओं के निवारण में अपनी क्षमता का उपयोग करे। श्री सुधीरजी लोढा ने कहा- पूज्य गुरुदेवश्री के दर्शन व उनका आशीर्वाद प्राप्त कर मैंने धन्यता का अनुभव किया है। मैं कहना चाहता हूँ कि जैन समाज को अल्पसंख्यक मान्यता मिलने से संस्कृति की सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा जैसे कई लाभ मिलेंगे। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में अल्पसंख्यक मान्यता मिलने से मिलने वाली सुविधाऐं व लाभों की विस्तार से चर्चा की।

श्री कल्याणपुरा जैन श्री संघ के अध्यक्ष श्री बाबुलालजी सेठिया, संयोजक श्री मांगीलालजी वडेरा, निर्माण अध्यक्ष श्री भंवरलालजी छाजेड, महामंत्री श्री संपतराजजी बोथरा, श्री रतनलालजी वडेरा ने श्री लोढाजी का तिलक, माला, श्रीफल, साफा, मोमेन्टो आदि द्वारा बहुमान किया। उनके साथ पधारी उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लोढा का भी अभिनंदन किया गया।

आई जी जितेन्द्र मालू का बहुमान

बाडमेर के ही लाडले पंजाब पुलिस के आई. जी. श्री जितेन्द्र मालू का प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारने पर हार्दिक बहुमान किया गया। श्री मालू ने कहा- मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे बचपन में पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. एवं पूज्य गुरुवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. का सानिध्य मिला। उन्हीं के आशीर्वाद व कृपा से मैं आज इस स्थान तक पहुँचा हूँ। श्री मालू वर्तमान में भटिण्डा में आई. जी. पद पर कार्यरत है।

कन्याकुमारी में शिलान्यास

भारत के दक्षिणी समुद्र के किनारे स्थित ऐतिहासिक पर्यटक स्थल कन्याकुमारी में परमात्मा महावीर स्वामी का जिन मंदिर निर्मित होने जा रहा है। साथ ही श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी एवं राजेन्द्रसूरि गुरू मंदिर का निर्माण भी होगा।

इस मंदिर का निर्माण जैन मंदिर देवस्थान रामदेवरा ट्रस्ट के तत्वावधान में होने जा रहा है।

संस्थान के अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्‌ढा ने बताया कि हर वर्ष लाखों जैन परिवार कन्याकुमारी आते हैं। परन्तु जैन मंदिर के अभाव में परमात्म दर्शन से उन्हें वंचित रहना पडता है। इस अभाव की पूर्ति इस उपक्रम के द्वारा होगी। उन्होंने बताया कि इस मंदिर निर्माण के साथ धर्मशाला, भोजनशाला, उपाश्रय आदि का निर्माण भी होगा। इस मंदिर हेतु भीनमाल निवासी श्री बगदावरमलजी सुभाषजी हरण ने भूमि संस्थान को समर्पित की। पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. द्वारा प्रदत्त ता. 14 मार्च 2014 को शिलान्यास का शुभ मुहूर्त्त संपन्न हुआ। जिन मंदिर की मुख्य शिला का लाभ भूमिदाता श्री बगदावरमलजी सुभाषजी हरण जैन मदुराई वालों ने लिया। जिन मंदिर की अन्य शिलाओं में भरत एण्ड कंपनी चेन्नई, सुरेश लूणिया चेन्नई, संघवी मनोहरीबाई कंवरलालजी बैद, सुगनचंदजी बरडिया, ढड्‌ढा एण्ड कं., हंसराजजी बच्छराजजी नाहर, केवलचंदजी दुगड, सुमेरमलजी गुलेच्छा ने लिया।

दादावाडी की मुख्य शिला का लाभ जुगराजजी छाजेड मदुराई ने लिया। गुरू मंदिर की मुख्य शिला का लाभ श्री टीकमचंदजी मंगलचंदजी ने लिया। शिलान्यास के इस अवसर पर चेन्नई, नागरकोइल, मदुराई, तिरूअनवेली आदि स्थानों से बडी संख्या में श्रावक गण पधारे थे। विधि विधान बैंगलोर के सुरेन्द्रभाई शाह एवं पिंकेशभाई चेन्नई वालों ने कराया।

जन्मदिवस मनाया

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में श्री मणिधारी युवा परिषद, मुंबई द्वारा गरीबों के लिये मुफ्त भोजन का आयोजन किया गया। करीब 300 से अधिक व्यक्तियों ने इसका लाभ लिया। इस अवसर पर श्री खरतरगच्छ संघ मुंबई के उपाध्यक्ष श्री जीवराजजी श्रीश्रीश्रीमाल व श्री मणिधारी युवा परिषद के अध्यक्ष संघवी मुकेश मरडिया आदि कई व्यक्ति उपस्थित थे। परिषद के सभी सदस्यों ने एक-दूसरे को गुरू-जन्मदिवस की शुभकामनायें दी व परमात्मा व दादा गुरुदेव से उनके दीर्घायु की कामना की।

शा. संपतराज खीमराजजी बोथरा,
मंत्री,
श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम संस्थान,
कुशल वाटिका बाडमेर

पूज्य गुरुदेव मरुधर मणि उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
के 55 वें वर्ष प्रवेश पर (दि. 15 मार्च 2014)
पर हार्दिक अभिनंदन...अभिवंदन

शा. चंपालाल हीरालालजी छाजेड़
ट्रस्टी,
श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम संस्थान,
कुशल वाटिका बाडमेर

शा. सज्जनराज मोहनराजजी मेहता
ट्रस्टी,
श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम संस्थान,
कुशल वाटिका बाडमेर

शा. मांगीलाल चिंतामणदासजी संकलेचा
मंत्री,
श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मंदिर, मांडवला

शा. रतनलाल रिखबदासजी वडेरा
उपाध्यक्ष,
श्री पार्श्वनाथ जैन श्वे.
कल्याणपुरा मंदिर ट्रस्ट, बाडमेर

शा. भूरचंद चिंतामणदासजी संकलेचा
उपाध्यक्ष,
श्री खरतरगच्छ जैन श्री संघ,
बाडमेर

शा. केवलचंद लक्ष्मणदासजी छाजेड़
प्रचार मंत्री,
श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम संस्थान,
कुशल वाटिका बाडमेर

हार्दिक बधाई शुभकामनाएं

श्रीमती सवितादेवी प्रदीपजी मेहता
के कुशल वाटिका महिला परिषद
की अध्यक्षा चुने जाने पर हार्दिक बधाई

शुभेच्छुक
शा. विरदीचन्द सम्पतराज-लुणीदेवी, पुरूषोत्तमदास-उषादेवी, गौरव-प्रियंका,
राहुल, नेहा, जीनु, खुशी, हनी एवं समस्त धरीवाल परिवार सनावडा वाले,
बाड़मेर-सुरत

पूज्य मुनि श्री मैत्रीप्रभसागरजी म.सा. मेरठ के पास के गांव सरधना में बिराजमान हैं। वे वहाँ से विहार कर हस्तिनापुर तीर्थ की यात्रा कर हिमाचल प्रदेश के कांगडा की ओर विहार करेंगे।

समाचार दर्शन

खरतरगच्छ पेढी की मीटींग 19 अप्रेल को जोधपुर में

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की कार्यकारिणी समिति की बैठक जोधपुर में 19 अप्रेल 2014 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में होगी। बैठक की अध्यक्षता पेढी के अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्ढा करेंगे। मीटींग में पेढी की गतिविधियों को कार्यशील बनाने, दादावाडियों के जीर्णोद्धार कराने बाबत विचार विमर्श किया जायेगा।

गुन्टुर में भावयात्रा

प.पू. महत्तरा पद विभूषीता श्री चम्पाश्रीजी म. एवं समता साधिका श्री जितेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा-8 की पावनकारी निश्रा में गुंटुर में 02/03/2014 को श्री सिद्धाचल भावयात्रा का आयोजन हुआ जिसमें लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम स्थल पर श्री जैन युवा संगठन के कार्यकर्ताओं ने शंत्रुजय गिरीराज की रचना की। भक्तों ने आंखों पर पट्टी बांधकर आराधकों का रेला बढ़ चला गिरीराज की ओर। तलेटी वंदन कर, चैत्यवंदन कर मन ही मन नमो जिणाणं का जाप करते यात्रिको ने अष्ट प्रकारी पूजन सामग्री तलेटी पर चढ़ाकर भावो के साथ आदिनाथ दादा के दर्शन पूजन-वंवदन हेतु आगे बढ़े।

भावयात्रा दरम्यान गुरुवर्या ने बताया कि पांचवे आरे में शतवाहन राजा के समय में नागार्जुन साधक ने अपने गुरुदेव आचार्य श्री पादलिप्तसूरिजी की स्मृति में पादलिप्तपुर (पालीताणा) बसाया था। शत्रुंजय पवित्र तीर्थाधिराज है। भावयात्रा दरम्यान गिरीराज पर भावों के साथ चढ़ते हुए अन्तर के भावों से ''दादा आदेश्वरजी दूर सु आयो दादा दर्शन दो. .. का स्वर वातावरण में भक्ति रस घोल रहा था। तत्पश्चात् सभी ने विधिवत रूप से पाँचों चैत्यवंदन आदि क्रियाएं संपन्न की। अन्त: में दादा के दरबार में सभी महानुभावों ने अपने जीवन में हुई विभिन्न गलतियों पर क्षमा याचना सजल नेत्रों से करते हुए नजर आए। भावयात्रा एवं स्वामिवात्सल्य का सम्पूर्ण लाभ शा मेरामचन्दजी हुण्डिया परिवार (मोकलसर) ने लिया।

उल्लेखनीय है कि साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म., विश्वरत्नाश्रीजी म., रश्मिरेखाश्रीजी म., चारूलताश्रीजी म., मयूरप्रियाश्रीजी म., चारित्रप्रियाश्रीजी म., तत्वज्ञलताश्रीजी म., संयमलताश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में नगर में सामुहिक आयंबील, श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा, श्री दादा गुरुदेव पूजा, चैत्यपरिपाटी आदि कार्यक्रमों के साथ प्रतिदिन जिनवाणी की गंगा प्रवाहीत हो रही है जिसमें सैकड़ों धर्मप्रेमी लाभान्वित हो रहे है।

अहमदाबाद से संघ का आयोजन

पूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर श्री जिनकान्ति सागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा व आशीर्वाद से अहमदाबाद से संघ यात्रा प्रवास प्रारंभ हो रहा है।

इस संघ का आयोजन श्रीमती गोदावरी देवी व्यापारीलालजी बोहरा परिवार हाला वालों की ओर से हो रहा है। ता. 20 अप्रेल को भव्य शोभायात्रा निकाली जायेगी। उसके बाद धर्मसभा का आयोजन होगा। ता. 21 अप्रेल को आयकर आयुक्त श्री के.एल.माहेश्वरी एवं पंडित प्रवर डॉ. श्री जितेन्द्र बी. शाह द्वारा हरी झंडी दिखाने के साथ संघ यात्रा का प्रारंभ होगा। जो केशरियाजी, आयड, करेडा, मालपुरा, हस्तिनापुर, महरौली, अजमेर, बिलाडा, कापरडा, ओसिया, नाकोडाजी, कुशल वाटिका-बाडमेर होती हुई 28 अप्रेल को अहमदाबाद पहुँचेगी। ता. 26 अप्रेल को बिलाडा नगर में पूज्य गुरुदेव उपाध्यायश्री की निश्रा प्राप्त होगी।

अहमदाबाद में प्रतिष्ठा

अहमदाबाद के शाहीबाग स्थित नीलकंठ सोसायटी में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर में अनंत लब्धि निधान गणधर गुरु गौतमस्वामी की प्रतिष्ठा 25 मई 2014 को ज्येष्ठ वदि 12 रविवार को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न होगी। समारोह का प्रारंभ 23 मई से होगा।

संघ की विनंती स्वीकार कर पूज्यश्री ने 2 अप्रेल 2014 को जहाज मंदिर में शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। यह ज्ञातव्य है कि इस मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा चार वर्ष पूर्व 23 मई 2010 को हुई थी।

भद्दिलपुर में प्रतिष्ठा

शीतलनाथ परमात्मा के च्यवन, जन्म, दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि भद्दिलपुर तीर्थ की अंजनशलाका प्रतिष्ठा वैशाख सुदि 13 ता. 12 मई 2014 को पूज्य मुनिराज श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में संपन्न होगी। भद्दिलपुर तीर्थ झारखंड राज्य के भोंदल गांव में है। लगभग 150 वर्ष पूर्व इस तीर्थ का विच्छेद हो गया था। इस तीर्थ की खोज व निर्माण में श्री ललितकुमारजी नाहटा का पुरूषार्थ रहा है।

इस मंदिर का निर्माण श्री हरखचंदजी रूक्मिणीदेवी नाहटा परिवार दिल्ली वालों की ओर से किया गया है।

श्री मोहनजी मनोजजी को डॉक्टरेट

चेन्नई निवासी बन्धु बेलडी श्री मोहनजी मनोजजी गुलेच्छा को तमिल वर्ल्ड यूनिवर्सिटी अमेरिका द्वारा समाज व शासन की निरन्तर सेवाओं के लिये डॉक्टरेट पद से विभूषित किया गया है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित है।

श्री सुनीलजी सिंघी चेयरमेन बने

मूल सिरोही निवासी और वर्तमान में अहमदाबाद में गुजरात भाजपा युवा नेता श्री सुनीलजी जे. सिंघी को गुजरात सरकार ने गुजरात श्रम कल्याण बोर्ड का चेयरमेन नियुक्त किया है। जैन समाज के आगेवान श्री सिंघीजी पिछले 25 वर्षों सें भाजपा से जुडे कार्यकर्ता है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

With best compliments from ASHOK M. BHANSALI

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

समाचार दर्शन

पूज्य गुरुदेव मरुधर मणि उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
के 55 वें वर्ष प्रवेश पर (दि. 15 मार्च 2014)
पर हार्दिक अभिनंदन...अभिवंदन

लखनऊ में प्रतिष्ठा

लखनऊ के चार सौ वर्ष प्राचीन श्री आदिनाथ जैन मंदिर की प्रतिष्ठा पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गण रत्ना साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. वर्धमान तपाराधिका पूजनीया साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में वैशाख सुदि 12 ता. 11 मई 2014 को संपन्न होगी।

इस प्राचीन जिन मंदिर का आवश्यक जीर्णोद्धार शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी बाबुमलजी हरण सिरोही वालों की प्रेरणा से करवाया गया है। इस प्राचीन जिन मंदिर में 51 प्राचीन प्रतिमाओं की पुनर्प्रतिष्ठा होगी।

शा. शंकरलाल मुलतानमलजी लूणकरणजी गोलेच्छा, बाडमेर

शा. बाबुलालजी दीपकुमारजी मेहता, बाडमेर

नाशिक दादावाडी की प्रतिष्ठा

पूजनीया खान्देश शिरोमणि साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म.सा. ठाणा 3 शहादा से नंदुरबार, बलसाणा होते हुए धूलिया पधारे, जहाँ प्रवचन, पूजा, ध्वजारोहण आदि के कई कार्यक्रम संपन्न हुए।

वहाँ से विहार कर मालेगांव, चांदवड होते हुए ता. 4 अप्रेल 2014 को नाशिक-आडगांव दादावाडी में प्रवेश किया। जहाँ उनकी प्रेरणा से नवनिर्मित विशाल कच्छपासन पर नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 18 जून 2014 को होने जा रही है। इस विहार धाम में उपाश्रय, धर्मशाला, भोजनशाला, प्याऊ, कार्यालय आदि का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। जिन मंदिर दादावाडी का कार्य तीव्र गति से चल रहा है। प्रतिष्ठा की भव्य तैयारियाँ की जा रही है। ट्रस्ट मंडल पूरी तरह से लगा हुआ है।

सूरत में प्रतिष्ठा

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में सूरत के पाल उपनगर के वेस्टर्न शिखरजी रेजिडेन्सी में नवनिर्मित श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा 4 जून 2014 को ज्येष्ठ सुदि 6 को संपन्न होगी। इस जिन मंदिर का निर्माण स्वद्रव्य से मोकलसर निवासी श्रीमती जमुबाई रिखबचंदजी गुलेच्छा चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत द्वारा करवाया गया है। समारोह का प्रारंभ 2 जून 2014 को पूज्यश्री के मंगल प्रवेश के साथ होगा। ता. 3 जून को भव्य शोभायात्रा का आयोजन होगा। ता. 4 को परमात्मा की प्रतिष्ठा होगी। ता. 5 को द्वारोद्घाटन के साथ पूज्यश्री का नाशिक की ओर विहार होगा।

समाचार दर्शन

शाजापुर में दादावाडी की प्रतिष्ठा

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया गणरत्ना साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में मध्य प्रदेश स्थित शाजापुर दादावाडी की प्रतिष्ठा आगामी ता. 18 अप्रेल को संपन्न होगी। इस प्राचीन दादावाडी का जीर्णोद्धार पूजनीया साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से संपन्न हुआ है। प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् पूज्याश्री का चातुर्मास हेतु जयपुर की ओर विहार होगा।

ऋजुबालिका मंदिर की प्रतिष्ठा

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया मरूधर ज्योति साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से परमात्मा महावीर की केवलज्ञान कल्याणक भूमि ऋजुबालिका में जिन मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ है। जिस मुद्रा में परमात्मा महावीर ने केवलज्ञान प्राप्त किया था। उसी गोदुहिकासन वाली प्रतिमाजी बिराजमान की जायेगी।

इस मंदिर की प्रतिष्ठा पूज्य मुनिराज श्री पियुषसागरजी म.सा. आदि मुनि मंडल एवं पूजनीया साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल की पावन सानिध्यता में ता. 25 जून को संपन्न होगी।

डुठारिया प्रतिष्ठा

पाली जिले के छाजेड परिवारों के गांव श्री डुठारिया नगर में आदिनाथ परमात्मा के भव्यातिभव्य जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा आगामी वैशाख सुदि 12 रविवार ता. 11 मई 2014 को पूज्य गुरुदेव आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न होने जा रही है।

इस गांव की विशेषता है कि यहाँ ओसवाल समाज के लगभग 150 घर हैं और वे सभी छाजेड गोत्रीय ही है। इतिहास कहता है कि दो छाजेड परिवार यहाँ आये थे। वे दो परिवार यहाँ रात रूके। दो ठहरे, इस पर से गांव का नाम डुठारिया हो गया। यहाँ के प्राचीन आदिनाथ परमात्मा के मंदिर का आमूलचूल जीर्णोद्धार करवाया गया। गांव में श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी है।

प्रतिष्ठा निमित्त पूज्य उपाध्यायश्री का नगर प्रवेश अक्षय तृतीया को 2 मई 2014 को होगा। उसी दिन नवनिर्मित आदेश्वर जैन आराधना भवन एवं भोजनशाला भवन का उद्घाटन होगा।

ता. 4 मई को कुंभस्थापना के साथ प्रतिष्ठा का मंगल महोत्सव प्रारंभ होगा। जिसके अन्तर्गत ता. 6 को च्यवन कल्याणक, 7 को जन्म कल्याणक, 8 को बधाई, नामकरण, पाठशाला गमन, 9 को विवाह, 10 को दीक्षा कल्याणक का वरघोडा, 11 को प्रतिष्ठा संपन्न होगी। 12 को द्वारोद्घाटन के साथ समारोह पूर्ण होगा।

प्रतिष्ठा की तैयारियां तीव्र गति से चल रही है। कार्यक्रम को सुचारू रूप से संचालित करने के लिये विभिन्न समितियों का गठन किया गया है। जो जिम्मेदारी के साथ कार्य सम्हाल रही है।

समाचार दर्शन

आकोला में दादावाडी बनेगी

महाराष्ट्र के आकोला नगर में पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया गणरत्ना साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की निश्रावर्ती पूजनीया साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से जिन मंदिर एवं दादावाडी का निर्माण होने जा रहा है। इस हेतु श्री कुशलसूरि सेवा ट्रस्ट का गठन किया गया है। श्री रमेशचंदजी गोलेच्छा को अध्यक्ष, श्री अजयजी बोथरा कोलकाता को उपाध्यक्ष एवं श्री विनोदजी गोलेच्छा को सचिव नियुक्त किया गया है।

दादावाडी निर्माण हेतु लगभग 11 हजार वर्गफीट का विशाल भूखण्ड मूल फलोदी एवं वर्तमान में आकोला निवासी श्री रमेशचंदजी विक्रमकुमारजी गोलेच्छा ने ट्रस्ट को भेंट किया है।

जिन मंदिर दादावाडी का भूमिपूजन, खातमुहूर्त्त एवं शिलान्यास 9 मार्च 2014 को अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस महोत्सव में बडी संख्या में गुरुभक्तों की उपस्थिति थी।

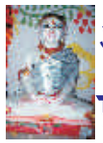

आगोलाई में परमात्म प्रवेश समारोह संपन्न

जोधपुर जिले के आगोलाई गांव में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में मूल गंभारे में मूलनायक श्री वासुपूज्य परमात्मा का मंगल प्रवेश 12 मार्च 2014 को अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

ता. 5 मार्च को बाडमेर प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर उग्र विहार कर कवास, बायतू, पचपदरा, थोब होते हुए 11 मार्च को आगोलाई में प्रवेश किया। ता. 12 मार्च को विशाल शोभायात्रा के साथ शुभ मुहूर्त्त में परमात्मा का नगर प्रवेश कराते हुए मूल गर्भगृह में प्रवेश करवाया गया। प्रवेश के बाद जाजम का मुहूर्त्त हुआ जिसमें बिंब भराने, पूजाओं व फलेचुन्दडी नौकारसियों आदि के चढावे संगीतकार श्री नरेन्द्रजी वाणीगोता द्वारा बोले गये। आशा से अधिक चढावे हुए।

केशरियाजी गज मंदिर में वर्षीतप पारणा

श्री कीकाभाई प्रेमचंद ट्रस्ट, गज मंदिर, केशरियाजी के तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति वर्षीतप के पारणों का आयोजन किया गया है। बडी संख्या में तपस्वियों का पारणा कराया जायेगा। तपस्वियों से निवेदन है कि यदि उन्होंने नाम न लिखाया हो तो शीघ्रता से नाम लिखावें। ताकि व्यवस्था सुचारू रूप से हो सके।

श्री कीकाभाई धर्मशाला, गज मंदिर
पो. रिषभदेव जिला- उदयपुर राज.
फोन-02907 230536, 94134 67651

लौद्रवपुर दादावाडी का जीर्णोद्धार

सुप्रसिद्ध तीर्थ श्री लौद्रवपुर तीर्थ पर स्थित श्री जिनदत्तसूरि जिनकुशलसूरि दादावाडी का आमूलचूल जीर्णोद्धार कराया जा रहा है।

पूज्य गुरुवर्या बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. सा. की पावन निश्रा में ता. 14 मार्च 2014 को जैसलमेर ट्रस्ट द्वारा दादा गुरुदेव के प्राचीन चरणों का विधि विधान के साथ उत्थापन किया गया।

इस कार्यक्रम में निश्रा प्रदान करने के लिये जैन ट्रस्ट जैसलमेर की विनंती स्वीकार कर पूजनीया बहिन म. ने बहुत उग्र विहार किया।

समाचार दर्शन

वीरायतन 200 तीर्थ क्षेत्रों में 200 स्कूल खोलेगी

शिक्षा, सेवा व साधना को समर्पित संस्था वीरायतन 200 तीर्थ क्षेत्रों में 200 स्कूलों का निर्माण कर लगभग एक लाख विद्यार्थियों को शिक्षा व संस्कार से जोड़ेगी। यह बात संस्था की संस्थापिका आचार्य चंदनाजी म.सा. ने अपने अल्प प्रवास पर 12 मार्च को स्थानीय आराधना भवन में आयोजित धर्मसभा में कही।

आचार्य श्री ने कहा कि इन स्कूलों के माध्यम से आस-पास के गांवों के लोगों व जनता को चारित्रवान नागरिक बनाने तथा उन्हें देश और समाज में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए तैयार किया जाएगा। स्कूल योजना की संयोजिका साध्वी शिलापजी ने कहा कि वीरायतन द्वारा स्थापित शिक्षा संस्थान देश के सर्वोच्च शिक्षा केन्द्रों के रूप में विकसित हुए हैं। इस अवसर पर नाकोड़ा ट्रस्ट के अध्यक्ष अमृतलाल जैन एडवोकेट, रतनलाल संखलेचा, सम्पतराज बोथरा, मांगीलाल मालू, भूरचंद संखलेचा, कैलाश कोटड़िया, भंवरलाल मालू, वीरचन्द भंसाली आदि कई व्यक्ति उपस्थित थे।

जैसलमेर तीर्थ विरायतन स्कुल खोलने की घोषणा

12.03.2014 को जैसलमेर महातीर्थ की यात्रा पर पधारी आचार्य चन्दनाजी का जैन ट्रस्ट के पदाधिकारियों द्वारा हार्दिक बहुमान किया गया। आचार्य चन्दनाजी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि जहाँ जिनालय वहाँ विधालय इस अभियान के तहत विशेष तौर पर गाँवों को विकास का केन्द्र बनाने के लिए संस्था ने राजस्थान में नाकोडा, बाडमेर, जोधपुर व जैसलमेर में तीर्थंकर महावीर विधा मन्दिर के नाम से स्कुल स्थापित करने की एक महत्वाकांक्षी योजना बनाई है। ट्रस्ट के अध्यक्ष महेंन्द्रसिंह भंसाली ने कहा कि जुलाई 2014 के शिक्षा सत्र में इस महती परियोजना का शुभारंभ स्वर्ण नगरी जैसलमेर से होता है तो प्रारंभिक रूप से जब तक विरायतन की ओर से नया भवन न बन जाये तब तक हम महावीर भवन का एक हिस्सा तथा हमारे ट्रस्ट की ओर से विद्यालय के स्टाफ के रहवास हेतु सुविधा प्रदान करने में गौरवान्वित महसुस करेंगे।

सुनील 'संचय' ने किया अनुसंधान

युवा विद्वान सुनील संचय, ललितपुर ने जैनाचार्य देवसेन के शौरसेनी प्राकृत वाङ्मय का दार्शनिक अध्ययन 'संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी' से प्रो. फूलचंद प्रेमीजी के निर्देशन में कर पी.एच.डी. डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। आचार्य देवसेन वि.सं. 955 में हुए जिन्होंने जैन दर्शन पर महत्वपूर्ण रचनाएं की हैं। लगभग ग्यारह सौ वर्ष पूर्व हुए आचार्यश्री उनके साहित्य को हृदयंगम कर वृहद अध्ययन कर सुनील संचय ने 480 पृष्ठों का अनुसंधान संस्कृत भाषा में ही तैयार कर अपना शोध प्रबंध पूर्ण किया है। श्रमण विद्या संकाय से पूर्ण इस शोध पर उत्तरप्रदेश के राज्यपाल महामहिम बी.एल.जोशी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय में आयोजित दीक्षांत समारोह में उन्हें यह उपाधि प्रदान की गई । पी.एच.डी. का विषय ''जैनाचार्यदेवसेनस्य शौरसेनी-प्राकृत वाङ्मयस्य दार्शनिकमध्ययनम्'' था। -राजेन्द्र जैन सनावद

बाडमेर में
श्रीमती धाईदेवी नेमीचंदजी छाजेड़
स्वर्ण सीढी पर आरोहण करते हुये।

9 से 11 मई तक शहादा में शिविर

पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा-5 निश्रा में जीवन निर्माण नवयुवक शिविर का आयोजन श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ शहादा द्वारा किया गया है। त्रिदिवसीय शिविर 9.10.11 मई 2014 को सम्पन्न होगा।

इस शिविर के संचालक पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने जानकारी देते हुए कहा- वर्तमान के वातावरण में युवकों को सही मार्ग दर्शन देने के लिये युवा शिविरों की महती आवश्यकता है। इस शिविर से न केवल धर्म-क्रिया का बोध मिलेगा अपितु तनावमुक्त जीवन शैली की भी प्रेरणा मिलेगी। व्यावहारिक, आध्यात्मिक, मानसिक और वैचारिक तौर पर उपजी हुई समस्याओं का समाधान धर्म की छत्र-छाँव में मिलेगा।

इस शिविर में 10 वर्ष से 40 वर्ष के युवक ही समिलित हो सकते हैं। सीमित संख्या में ही प्रतियोगी लिये जायेंगे। इसका आवेदन 25 मई तक प्राप्त होना चाहिये। फोन के द्वारा भी सूचित किया जा सकता है। यह शिविर जीवन, धर्म, साधना, शान्ति, परिवार आदि अनेक विषयों को समेटता हुआ आयोजित होगा। इच्छुक शिविरार्थी संपर्क करें-

निवेदक : श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, शहादा
शिविर स्थल : सुघोषाघंट मंदिर दादावाड़ी, शहादा
सुमतीलाल खिंवसरा - 09881648278,
प्रदिप नाहटा-09421614419,
प्रविण लुणिया-0976604844,
मनोज कोचर-09423916294,
यश नाहटा-09970205159,
जितेश छाजेड़-07588735376

भारत विकास परिषद् सांचोर

भारत विकास परिषद् चेरिटेबल ट्रस्ट सांचोर द्वारा संचालित प्राथमिक हॉस्पीटल द्वारा विकलांग सहायता केन्द्र पर 843 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण करके नि:शुल्क दवाई उपलब्ध करवाई गई। फरवरी माह 2014 में फीजियोथैरेपी सेंटर के अन्तर्गत 350 मरीजों को यह सेवा प्रदान की गई।

विकलांग सहायता केन्द्र एवं पुनर्वास केन्द्र पर 16 विकलांग, जिनमें 3 को कृत्रिम पैर व हाथ, 7 को स्टीक व बैशाखी तथा 5 अंगों को रिपेयर कर लाभान्वित किया गया।

संगोष्ठी सम्पन्न

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के संस्कृत विभाग तथा राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 12-13 फरवरी, 2014 को ''जैन, बौद्ध एवं उपनिषद् वाङ्मय में अध्यात्म-चिन्तन'' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में कुल 6 सत्रों में 35 शोधपत्र प्रस्तुत हुए। संगोष्ठी में कुलपति प्रो. भंवरसिंह राजपुरोहित, प्रो. दयानन्द भार्गव-जयपुर प्रो. सागरमल जैन-शाजापुर भी सम्मिलित थे। मुख्य अतिथि संत चन्द्रप्रभसागरजी ने कहा कि अध्यात्म का पथ मानव समाज को उत्कर्ष की ओर ले जाता है।

सम्पूर्ण सत्र में विद्वानों का स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो. सत्यप्रकाश दुबे ने किया तथा सुसंचालन प्रो. सरोज कौशल ने किया।

-प्रो. धर्मचन्द जैन, निदेशक,
राष्ट्रिय संगोष्ठी

समाचार दर्शन

मुमुक्ष श्वेता धारीवाल का कोटुर में अभिनंदन

दिनांक 10 फरवरी को दादावाडी का ध्वाजारोहण कार्यक्रम शा जयन्तिलालजी निर्मलकुमारजी धारीवाल की ओर से हुआ इसके साथ ही दीक्षार्थी बहिन का वरघोड़ा एवं स्वामी वात्सल्य रखा गया। श्री संघ के द्वारा दिक्षार्थी का अभिनंदन किया गया। प्रदीपजी धारीवाल, उम्मेदजी धारीवाल, ऊषाजी मुणोत, चंदनबाला बहुमण्डल ने दीक्षार्थी के अभिनंदन समारोह में अपने-अपने भाव प्रस्तुत किये। साथ ही अपनी भुआसा की दीक्षा के ऊपर साक्षी केशर चुनाली दिव्या धारीवाल ने भी एक सुन्दर संवाद द्वारा अपने भाव प्रस्तुत किये। सुरेखा-विनिता धारीवाल ने सुन्दर गीतिका द्वारा भाव प्रस्तुत किये।

कुमारी श्वेता धारीवाल की भागवती दीक्षा आचार्य श्री विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी मं के शिष्य आचार्य श्री विजयबोधिरत्नसूरीश्वरजी म. व साध्वी श्री सम्यग्दर्शिताश्रीजी म. आदि ठाणा के निश्रा में अहमदाबाद हाथीजन में ता. 23 अप्रेल 2014 को होने जा रही है। वरघोडा 22 अप्रेल को होगा।

साध्वी श्री अर्हम्निधिश्रीजी को डाक्टरेट उपाधि

प.पू. प्रखर व्याख्यात्री गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्या प. पू. साध्वी अर्हम्निधिश्रीजी म. को ''जैन एवं न्याय दर्शन में प्रमाण का समीक्षात्मक अध्ययन'' विषय पर सी. एम.जे. यूनिवर्सिटी द्वारा अनुभव स्मारक संस्थान, पाली में डॉक्ट्रेट की उपाधि प्रदान की गई। जहाज मंदिर परिवार की ओर से उन्हें उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

हास्पेट में पालरेचा गर्ल्स कॉलेज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

होसपेट (कर्नाटक) में शा. गिरधारीलाल श्रेयाजी पालरेचा मेमोरियल गर्ल्स प्री यूनिवर्सिटी कॉलेज होसपेट का वार्षिक समारोह 10 फरवरी 2014 को आयोजित हुआ।

विद्यार्थियों की प्रार्थना के साथ समारोह को कॉलेज के प्रिन्सीपल श्री जगदीश पी.एम. ने संचालित किया। सचिव श्री अशोक जेरे ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कॉलेज के 10 वर्षों की प्रगति बताई।

श्री बाबूलाल जी. जैन ने अध्यक्षीय उद्बोधन में बताया कि 1100 विद्यार्थियों की क्षमता वाले इस कॉलेज की क्षमता 5000 तक बढ़ाई जायेगी तथा उच्च अंक प्राप्त विद्यार्थियों को सम्मानित किया जायेगा।

समारोह में बड़ी संख्या में गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही।

नि:शुल्क नेत्र शिविर संपन्न

श्री बाबुलालजी जैन की 21 वीं पुण्य तिथी पर दि. 23.2.2014 को अरविंद नेत्र चिकित्सालय पांडीचेरी के सहयोग से सेम्वनायर कोयल में नि:शुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। इसमें डॉक्टरी टीम ने 319 की जांच की इसमें से 63 को नैत्र शल्य क्रिया के लिये पांडीचेरी भेजा गया। वहां नि:शुल्क शल्य क्रिया की जायेगी। बाकी रोगियों की जरूरत के अनुसार चश्में एवं दवाये दी गई।

इस शिविर का सम्पूर्ण खर्च बाबुलाल सुरेशकुमार जैन चेरिटेबल ट्रस्ट मायावरम् ने किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष बी. सुरेश कुमार जैन ने डॉक्टरी टीम एवं अतिथियों का बहुमान किया अन्त में स्वरूचि भोजन रखा गया।

प्रेषक- बी. सुरेश कुमार जैन

इन्दौर में 75 वां दीक्षा दिवस मनाया

प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. की सुशिष्या महत्तरा पद विभुषिता परम पूज्य श्री विनीताश्रीजी म.सा. को फागुन वदी 2 वि.सं. 1996 को अनादरा में परम पूज्य आचार्य श्री विजयशान्तिसूरीश्वरजी द्वारा दीक्षा दिलाई गई थी।

महत्तरा श्री विनीताश्रीजी महाराज साहब के 75 वां दीक्षा वर्ष अनुमोदनार्थ त्रि-दिवसीय कार्यक्रम इन्दौर में बड़ी धूम धाम से दिनांक 16 फरवरी 2014 से 18 फरवरी 2014 तक मनाया गया। इस अवसर पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा, गुणानुवाद सभा, दादा गुरुदेव की पूजा का आयोजन किया गया। साथ ही दीक्षा दिवस पर बनी डॉक्यूमेंटरी फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। इस कार्यक्रम में अतिथि श्री अनिल मेहता, बड़ोदरा, श्री विनयकुमारजी कोचर, अहमदाबाद एवं श्री सुरेन्द्र पारख बम्बई उपस्थित थे। इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन श्री नरेन्द्रकुमारजी मनोजकुमारी कोठारी परिवार के द्वारा किया गया।

प्रवर्तिनी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म. सा. का देवलोक गमन

परम पूज्य विचक्षण ज्योति प्रवर्तिनी महोदया श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म.सा. का गत 7 मार्च, 2014 को नागपुर में देवलोक गमन हो गया। उनका जन्म बीकानेर की धरा पर वि. सं. 1995 माघ वदि 13 के दिन हुआ था। 14 वर्ष की उम्र में आपने संयम ग्रहण किया था। बाद में आपकी मातुश्री (पू. साध्वी श्री वर्धमानश्रीजी म.सा.) ने भी दीक्षा ग्रहण की थी।

यह चातुर्मास सूरत की धन्यधरा पर पूर्ण कर कोलकाता की ओर विहार करते हुए महाराष्ट्र में नंदुरबार, अमलनेर, जलगांव, आकोला, अमरावती, वर्धा आदि क्षेत्रों में विचरण करते हुए नागपुर पधारे थे।

देवलोक गमन के समाचार प्राप्त होते ही समग्र भारत से लोग पूज्याश्री के अंतिम दर्शन हेतु उपस्थित हुए। 8 मार्च को पूज्या श्री की अंतिम यात्रा इतवारी बाजार से प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से होती हुई इन्दौरा दादाबाड़ी के विशाल प्रांगण में पहुंची, जहां आप श्री के सांसारिक भतीजे श्री पदमचंद नाहटा, श्री ललित कुमार नाहटा, श्री प्रकाश कुमार नाहटा एवं सांसारिक पौत्र श्री अरिहंत कुमार नाहटा के साथ में नागपुर श्री संघ के गणमान्य महानुभाव ने मुखाग्नि दी।

प्रवर्तिनी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म. को श्रद्धासुमन अर्पित किये

बाड़मेर आराधना भवन में मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. व मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा एवं विचक्षण मणि श्री सुरंजनाश्रीजी म. के सानिध्य में 9 फरवरी को प्रात: गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. व मुनि मनीषप्रभसागरजी म. ने कहा कि ज्ञानवर्द्धक प्रवचनों को समाज हमेशा याद रखेगा। साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म. ने प्रव. श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म. के संस्मरण बताये।

साध्वी श्री सिद्धांजनाश्रीजी म., साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म., साध्वी श्री सौम्यांजनाश्रीजी म., साध्वी श्री दर्शनांजनाश्रीजी म. ने आपके संयम जीवन के गुणों का स्मरण किया।

Diploma®
Metal Industries

For Better Cooking & Economy

Mfg. Of Stainless Steel Utensils

B-7, RAVI ESTATE, AMBIKA NAGAR, ODHAV
Ahmedabad-382415 (Gujarat)

B.L.Bothra 09426170801 Ramesh 09427031294
Jitesh 09427031295 Sunil 09429021264

समाचार दर्शन

साध्वी नयप्रज्ञाश्रीजी म. का स्वर्गवास

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म. सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की निश्रावर्ती पू. साध्वी श्री नयप्रभाश्रीजी म. का अहमदाबाद में ता. 9 मार्च को स्वर्गवास हो गया। वे पिछले समय से केन्सर से पीडित थे।

उनका जन्म वि.सं. 2010 में श्रावण शुक्ल 11 को गुजरात के पादरा में हुआ था। मात्र 19 वर्ष की उम्र में आपकी भागवती दीक्षा हुई थी। जहाज मंदिर परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजली।

दादा जिनकुशल गुरुदेव का महापूजन सम्पन्न

फाल्गुन पूर्णिमा के अवसर पर कुशल दर्शन मित्र मण्डल की ओर से एक दिवसीय बाड़मेर से ब्रह्मसर गुरुदेव दर्शन यात्रा का आयोजन किया गया। ब्रह्मसर में दादा श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म. के चरण पादुकाओं के आगे कुशल वाटिका प्रेरिका डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की निश्रा में महापूजन का आयोजन किया गया।

प्रेषक– कपिल मालू

पूज्य गुरुदेव मरुधर मणि उपाध्याय प्रवर

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

के 55 वें वर्ष प्रवेश पर (दि. 15 मार्च 2014)
पर हार्दिक अभिनंदन...अभिवंदन

गुरु आज्ञा में निश दिन रहिये, जो गुरु चाहे सोयि सोयि करिये,
गुरु चरण रज मस्तक दीजे, निज मन शुद्धि कर लीजे।।
आँखिन ज्ञान सुअंजन दीजे, परम सत्य का दरशन करिये।
गुरु आज्ञा में निश दिन रहिये।

卐

शा. बाबुलाल भगवानदासजी सेठिया
अध्यक्ष,
श्री पार्श्वनाथ जैन श्वे. कल्याणपुर मंदिर ट्रस्ट
बाडमेर

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. श्री सम्मेत शिखरजी आदि पूर्वी भारत स्थित कल्याणक भूमियों का पावन स्पर्श-यात्रा करते हुए छत्तीसगढ पधार गये हैं। वे 21 मार्च को महासमुन्द पधारे। पूज्य श्रमण संघीय प्रवर्तक मुनिराज श्री रतनमुनिजी म. सा. की पावन प्रेरणा से निर्मित मंगल साधना केन्द्र में ता. 29 से 31 मार्च तक त्रिदिवसीय महापूजनों का आयोजन किया गया। ता. 29 को ऋषिमंडल महापूजन, ता. 30 को सरस्वती महापूजन, ता. 31 को उवसग्गहरं महापूजन पढाया गया।

उसके बाद पूज्यश्री वहाँ से 1 अप्रेल को विहार कर भिलाई पधारे। वहाँ परमात्मा का उत्थापन कर चल प्रतिष्ठा की गई। 2 अप्रेल को गटागट परिवार द्वारा संचालित किंग क्वीन स्कूल में सरस्वती देवी की प्रतिमा बिराजमान की गई। वहाँ से विहार कर दुर्ग पधारेंगे। जहाँ उनकी निश्रा में परमात्मा महावीर का जन्म कल्याणक मनाया जायेगा। उसके बाद पूज्यश्री के राजस्थान की ओर विहार की संभावना है।

पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री

मनीषप्रभसागरजी म.सा. बाडमेर बिराज रहे हैं। नवपदजी की ओली उनकी निश्रा में संपन्न होगी। ओलीजी के बाद विहार कर जहाज मंदिर होते हुए फालना पधारेंगे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में वैशाख सुदि 1 ता. 30 अप्रेल को नवनिर्मित आराधना भवन का उद्घाटन होगा। वहाँ से डुठारिया प्रतिष्ठा पर पधारेंगे।

पूज्य मुनि श्री पीयूषसागरजी म.सा. आदि मुनि मंडल एवं पू. साध्वी श्री विजयप्रभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल की पावन निश्रा में नागपुर में पू. प्रवर्तिनी श्री चंद्रप्रभाश्रीजी म.सा. के स्वर्गारोहण निमित्त 21 से 25 मार्च तक पंचाह्निका महोत्सव आयोजित किया गया।

पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. ठाणा 5 ने पालीताना से 26 मार्च 2014 को विहार किया है। वे बडौदा, राजपीपला, खापर, अक्कलकुआं, तलोदा, वाण्याविहिर, होते हुए शहादा पधारेंगे। जहाँ त्रिदिवसीय शिक्षण शिविर का आयोजन होगा।

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. सुलक्षणाश्रीजी म. श्रावस्ती होते हुए ता. 1 अप्रेल को लखनऊ पधारे। यहाँ उनकी पावन निश्रा में नवपदजी की ओली की आराधना होगी। उसके बाद यहाँ आदिनाथ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा होगी। तत्पश्चात् चातुर्मास हेतु दिल्ली की ओर विहार होगा।

पूजनीया साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 25 मार्च को कर्णाटक प्रान्त के टुमकुर पहुँचे। वे हुबली की ओर विहार कर रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा बाडमेर से विहार कर बिशाला, सिणधरी होते हुए पाली पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म., श्री शुभंकराश्रीजी म. आदि ठाणा रतलाम से विहार कर बांसवाडा, साबला, करेडा पार्श्वनाथ होते हुए पाली पधारेंगे।

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. सा., पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा 3 ने 18 मार्च को बाडमेर से विहार किया है। वे नाकोडाजी कुछ दिन रूक कर जहाज मंदिर पधारेंगे।

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. ठाणा 3 बाडमेर से विहार कर जैसलमेर होते हुए लौद्रवाजी तीर्थ पधारे। जहाँ उनकी निश्रा में दादावाडी के उत्थापन का विधान संपन्न हुआ। वहाँ से ब्रह्मसर पधारे, जहाँ गुरुदेव की प्रत्यक्ष दर्शन स्थली दादावाडी के दर्शन किये। अट्ठम तप की तपस्या करके जैसलमेर पधारे। वहाँ से देवीकोट, डांगरी, बायतू होते हुए नाकोडाजी पधारे। वहाँ से जहाज मंदिर यात्रा करते हुए आगोलाई प्रतिष्ठा पर पधारेंगे। वहाँ से वे थोब, पचपदरा, बालोतरा होते हुए जसोल पधारेंगे, जहाँ श्री प्रकाशजी नाहटा की मातुश्री का जीवित महोत्सव आयोजित होगा। वहाँ से वे विहार कर डुठारिया पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा ने आकोला से विहार कर दिया है। आकोला में उनकी पावन निश्रा में जिनमंदिर एवं दादावाडी का खात मुहूर्त संपन्न हुआ। वे चेन्नई की ओर विहार कर रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 25 मार्च को बेलगांव पहुँचे। वहाँ से हुबली की ओर विहार कर रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. गुन्टुर में शासन प्रभावना करते हुए अंगोल, नेल्लुर, गुडुर होते हुए चेन्नई की ओर विहार कर रहे हैं। वे 7-8 अप्रेल तक चेन्नई पधारेंगे। लगभग 20-25 दिनों की स्थिरता के पश्चात् बैंगलोर की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री जयरत्नाश्रीजी म. नूतनप्रियाश्रीजी म. ठाणा 3 पालीताना से विहार कर पूना पहुँच गये हैं। वे पूना से इचलकरंजी होते हुए हुबली की ओर विहार कर रहे हैं। अक्षय तृतीया तक हुबली पहुँचने की संभावना है।

पूजनीया साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म.सा. के मणके में तकलीफ होने से अहमदाबाद में इलाज हेतु बिराजमान है।

पूजनीया साध्वी श्री शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा केशरियाजी, उदयपुर, सादडी होते हुए पाली पधार गये हैं।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 पालीताना श्री जिन हरि विहार में बिराज रहे हैं। पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. एवं पूजनीया साध्वी श्री प्रियदक्षांजनाश्रीजी म. के दूसरा वर्षीतप चल रहा है। उनका पारणा अक्षय तृतीया को पालीताना में होगा।

जहाज मंदिर पहेली 94 सही उत्तर

1. दस
2. कषाय
3. घेवरिया
4. कुमारपाल
5. सोमप्रभाचार्य
6. अनुत्तर विमान
7. बत्तीस लाख योजन
8. साढ़े तीन करोड़
9. खरतरगच्छ
10. चंडकौशिक
11. अन्तर्द्वीप
12. मनुष्य
13. क्रीत
14. वीस
15. गौतम
16. गोशालक
17. अतिमुक्तक
18. कपिल केवली
19. सन्देहविषौषधि
20. धर्मरुचि अणगार
21. जिनवल्लभसूरि
22. जयन्ति श्राविका
23. प्रतिक्रमण
24. सामायिक
25. निसर्ग
26. मूला

चातुर्मास निर्णय

पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. दिल्ली
पू. साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. जयपुर
पू. साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म. जोधपुर बाडमेर भवन
पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा.
पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. इचलकरंजी
पू. साध्वी श्री प्रज्ञाश्रीजी म. जावरा
पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. चेन्नई
पू. साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म. नंदुरबार
पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. बाडमेर
पू. साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म. इन्दौर
पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. मुंबई

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- सुशीला भण्डारी-कोटा।

छह प्रेरणा पुरस्कार- मनोहरलाल झाबख-कोटा, समता कांकरिया-ब्यावर, मधु जैन-ऊटी, स्नेहलता चौरडिया-जयपुर, निर्मला बच्छावत-फलौदी, भूरचंद मालू-जोधपुर।

इनके उत्तर पत्र सही थे- साध्वी विशालप्रभाश्रीजी म., साध्वी अमीपूर्णाश्रीजी म., आशा छाजेड़-जोधपुर, मनीषा लूणिया-ऊँटी, प्रमिला मेहता-जयपुर, भंवरी देवी गोलेच्छा-ऊँटी, संगीता गोलछा-कोण्डागाँव।

इनके उत्तर पत्र आंशिक रूप से त्रुटिपूर्ण थे- लीला भूरट-हॉस्पेट, पुष्पा गोखरू-बिजयनगर, भूमिका जैन-जगदलपुर, पार्श्व लूणिया-गुढियारी, भंवरलाल संखलेचा-अक्कलकुवा, प्रियंका संकलेचा-अक्कलकुवा, मधु खवाड़-मदनगंज, मोहिनी पारख-धमतरी, निर्मला जैन-उदयपुर, ममता गोलछा-कोण्डागाँव, नमिता जैन-उदयपुर, सरोज रूणवाल-धूले, शांति जैन-जोधपुर, सोहन झाबक-बडौदा, सुचित्रा भंसाली-नोयडा, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, मनीला पारख-जयपुर।

पहेली-९३ के विलम्ब से प्राप्त उत्तर- सपना डाकलिया-जगदलपुर, पुष्पा टाटिया-जगदलपुर, विमला ललवाणी-तिरूपातुर, सर्वेश शर्मा-मालपुरा, चन्द्रसिंह जैन-उदयपुर, शैफाली जैन-बूंदी, वीणा जैन-जयपुर, चन्द्रप्रकाश-जयपुर, चित्रा झाबक-बडौदा, सुनील जैन-मुम्बई, सुलोचना चोपड़ा-ब्यावर, लता भंसाली-जयपुर, सृष्टि जैन-जयपुर, सुन्दरीबाई राखेचा-त्रिची, मंजू कांस्टिया-कोलकाता, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, सुचित्रा भंसाली-नोयडा, अर्पणा कोचर-खापर, किरण मेहता-भायन्दर, मनोहरीदेवी बाफना-नंदुबार, पिस्ता गोलछा-जयपुर, सरला भंसाली-खेतिया, गुंजन भंसाली-शहादा, कुशल कोठारी-अमलनेर।

96
तत्त्व-परीक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 96

13 अप्रेल 2014, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को परमात्मा महावीर का परम पावन जन्म कल्याणक है। इस पहेली में प्रश्नों को इस प्रकार क्रम किया गया है कि प्रथम 1 से 8 प्रश्नों के उत्तर के प्रथम अक्षर से **'भगवान महावीर'** शब्द बनेगा। इसी प्रकार हर आठ प्रश्नों के उत्तरों के प्रथम अक्षरों में भगवान महावीर मिलेंगे। उत्तर का प्रथम अक्षर दिया गया है।

1. जीव के तीन भेदों में से एक — भ .....
2. चार अनुयोगों में से एक — ग .....
3. स्वाध्याय के प्रकारों में से एक — वा .....
4. तीन शाश्वत सूत्रों में से एक — न .....
5. पुत्रों को दीक्षा के संस्कार देने वाली — म .....
6. नोकषायों में से एक — हा .....
7. हेमचन्द्राचार्य रचित स्तोत्र — वी .....
8. रोग की माता — र .....
9. देवानंदा ब्राह्मणी के वर्णन वाला आगम — भ .....
10. दण्डक प्रकरण के रचयिता — ग .....
11. त्रिपृष्ठ नाम से महावीर क्या बने — वा .....
12. भगवार महावीर के भ्राता — न .....
13. मलयासुंदरी के पति — म .....
14. गणधर अचलभ्राता का गोत्र — हा .....
15. नव रसों में से एक — वी .....
16. मोक्ष का दिव्य साधन-उपकरण — र .....
17. श्री शांतिनाथ का पंचकल्याणक नक्षत्र — भ .....
18. चौदह पूर्वों की रचना करने वाले — ग .....
19. पार्श्वप्रभु की जन्मभूमि — वा .....
20. चार प्रत्येक बुद्ध में से एक — न .....
21. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि द्वारा प्रतिबुद्ध राजा — म .....
22. प्रभु महावीर के अभिग्रह के तेरह बोल में से एक — हा .....
23. महावीर भक्त उदायन कहाँ के राजा थे — वी .....
24. अन्तगड सूत्र में वर्णित तपों में से एक — र .....

भूरचंद गेनीरामजी श्रीश्रीमाल, बाडमेर

गोतमचंद केसरीमलजी मालू, बाडमेर

संपतराज पोकरदासजी सिंघवी, बाडमेर

राजेन्द्रकुमार भंवरलालजी वडेरा, बाडमेर

पूज्य गुरुदेव मरुधर मणि उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
के 55 वें वर्ष प्रवेश पर (दि. 15 मार्च 2014)
पर हार्दिक अभिनंदन...अभिवंदन

सुनीलकुमार हरिरामजी बोथरा, बाडमेर

प्रकाशचंद भूरचंदजी पारख, बाडमेर

सुनीलकुमार पारसमलजी छाजेड, बाडमेर

फालना में आराधना भवन का उद्घाटन

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य प्रशिष्य पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में फालना नगर में श्री आदिनाथ जिन मंदिर एवं दादावाडी की 12वीं वर्षगांठ निमित्ते त्रिदिवसीय परमात्म भक्ति का आयोजन होगा। इस मंदिर दादावाडी की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में वि. 02059 वैशाख शुक्ल तृतीया ता. 11 मई 2002 को संपन्न हुई थी। ता. 1 मई को पूज्यवरों के प्रवेश समारोह के साथ-साथ अठारह अभिषेक का आयोजन होगा। ता. 2 मई को सतरह भेदी पूजा के साथ जिन मंदिर के शिखर पर ध्वजा चढाई जायेगी। साथ ही श्रीमती लक्ष्मीबाई टेकचंदजी चौपडा आराधना भवन का उद्घाटन किया जायेगा। इस आराधना भवन का निर्माण श्री आनंदकुमारजी कांतिलालजी प्रकाशचंदजी चौपडा परिवार ने अपने माता पिता की स्मृति में करवाया है। शिखर पर कायमी ध्वजा भी चौपडा परिवार की ही है। दोपहर में दादा गुरुदेव की पूजा पढाई जायेगी। ता. 3 मई को बसों द्वारा जाखोडा तीर्थ की यात्रा का कार्यक्रम रहेगा।

श्रद्धांजली श्री घेवरचंदजी घोडा

हाडेचा निवासी श्री घेवरचंदजी घोडा का असामयिक स्वर्गवास हो गया। वे संघ के आगेवान श्रावक थे। शासन व समाज के प्रति उनका अनुमोदनीय समर्पण था। वे समाज के हर कार्य में तत्पर रहते थे। सौम्य और हंसमुख स्वभाव वाले श्री घेवरचंदजी के स्वर्गवास से समाज में बहुत बडी क्षति हुई है। परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें सद्गति प्राप्त हो और वे क्रमशः कर्मक्षय कर मोक्ष सुख का वरण करें। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली।

25. भगवान महावीर की चातुर्मास स्थली — भ .....
26. गच्छ में रहे हुए साधु-साध्वियों के आचार को बताने वाला ग्रन्थ — ग .....
27. सिद्धसेन दिवाकर के गुरु महाराज — वा .....
28. कौन सेठ मृत्यु पाकर मेंढ़क बना — न .....
29. एक परमाधामी देव — म .....
30. श्री अजितनाथ का लांछन — हा .....
31. एक स्तव जिसमें वीरप्रभु की स्तुति है — वी .....
32. पर्युषण के पांच कर्त्तव्यों में से एक — र .....
33. साधु की गौचरी किसके समान? — भ .....
34. बारह अंग सूत्रों को बताने वाला एक शब्द — ग .....
35. परमात्मा महावीर के गणधर — वा .....
36. वीर प्रभु का समकित प्राप्ति भव — न .....
37. त्रिशला माता ने चौदह क्या देखे — म .....
38. वीर प्रभु को देखकर भागने वाला — हा .....
39. सरस्वती का प्रिय वाजिंत्र — वी .....
40. रत्नाकर पच्चीसी के रचनाकार — र .....

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 मई तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल जून में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर जहाज मंदिर में छपे फार्म में ही भरकर भेजे। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकार नहीं की जायेगी।
7. प्रेषक पहेली का उत्तर जहाज मंदिर पत्रिका के कार्यालय पर भारतीय डाक से ही पोस्ट करें।
8. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
9. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-
शा. सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया (छबड़ा) ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | |

।। श्री शांतिनाथाय नमः ।।
।। श्री दादा गुरुभ्यो नमः ।।

प. पू. पार्श्वमणि प्रेरिका गणरत्ना
सुलोचना श्रीजी म.सा.
प. पू. तप-आराधिका, सेवाभावी
पू. सुलक्षणाश्रीजी म.सा.
की सुशिष्या
प. पू. साध्वीरत्ना प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा.
के डॉक्टरेट पदवी पर हार्दिक बधाई

मुंबई महानगरे
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुंबई में
प. पू. पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका प.पू. सुलोचनाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
प. पू. डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. एवं प. पू. प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म.सा.
का भव्य चातुर्मास में सादर आमंत्रण

आज्ञा
प. पू. गच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनकैलाशसागरसूरिजी म.सा.

आशीर्वाद
पूज्य गुरूदेव उपाध्याय प्रवर
मरूधर मणि
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

निवेदक
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ-मुंबई
श्री मणिधारी युवा परिषद-मुंबई
श्री खरतरगच्छ महिला परिषद-मुंबई

08
तत्त्वावबोध

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

चतुर्भंगी का चमत्कार

५१. धन-दान
1. धनी भी, दानी भी- जगडूशाह
2. धनी परन्तु कंजूस- मम्मण सेठ
3. धन नहीं परन्तु दानी- पूणिया श्रावक, भीमा कुंडलिया
4. धन और दान, दोनों नहीं- द्रुमक भिखारी

५२. बल-क्षमा
1. बलवान और क्षमावान्, दोनों- बाहुबली, उदायन राजा
2. बलवान परन्तु क्षमावान् नहीं- विश्वभूति, त्रिपृष्ठ वासुदेव
3. निर्बल फिर भी क्षमावान्- चण्डरूद्राचार्य का नूतन शिष्य
4. निर्बल और अक्षमावान्- महाशतक श्रावक

५३. सौन्दर्य-सदाचार
1. सुन्दर और सदाचारी, दोनों-सनत्कुमार चक्रवर्ती
2. सुन्दर परन्तु दुराचारी- ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती
3. सदाचारी परन्तु सुन्दर नहीं- हरिकेशबल
4. सुन्दर और सदाचारी, दोनों नहीं- कालसौकरिक कसाई

५४. ज्ञान-विनम्रता
1. ज्ञान और विनम्रता, दोनों-गणधर गौतम स्वामी
2. ज्ञान परन्तु विनम्रता नहीं- जमाली
3. विनम्रता परन्तु ज्ञान नहीं- मासतुष मुनि
4. ज्ञान और विनम्रता, दोनों नहीं- गोशालक

५५. आगमन-निगमन
1. जहाँ जाता है, वहाँ से आता नहीं- मोक्ष में
2. जो आता है पर जाता नहीं- केवलज्ञान
3. जो आते हैं और जाते भी हैं- चार गति के जीव
4. जहाँ जाते नहीं, जहाँ से आते भी नहीं- अलोक में

५६. दीक्षाः सिंह व शृगाल
1. सिंह के समान दीक्षा लेकर सिंह के समान पाले- गजसुकुमाल
2. सिंह के समान दीक्षा लेकर शृगाल के समान पाले- कण्डरीक मुनि
3. शृगाल के समान दीक्षा लेकर सिंह के समान पाले- मरीचि, चण्डरूद्राचार्य का शिष्य
4. शृगाल के समान दीक्षा लेकर शृगाल के समान पाले- कुलवालुक मुनि

५७. दान-संसार
1. दान देकर संसार घटाया- रेवती श्राविका, सुमुख गाथापति ने
2. दान देकर भी संसार नहीं घटाया- नागश्री ब्राह्मणी, मम्मण सेठ (पूर्वभव), कपिला दासी
3. दान नहीं दिया पर संसार घटाया- जीरण सेठ
4. दान नही दिया, संसार भी नहीं घटाया- कालसौकरिक कसाई

५८. पीड़ा और अभिव्यक्ति
1. पीड़ा नहीं है पर अभिव्यक्त कर सकते हैं- तीर्थंकर परमात्मा
2. पीड़ा है पर अभिव्यक्त नहीं कर सकते- वृक्ष आदि एकेन्द्रिय जीव
3. पीड़ा नहीं है और अभिव्यक्ति भी नहीं कर सकते- सिद्ध परमात्मा
4. पीड़ा है और अभिव्यक्ति भी कर सकते हैं- नारकी आदि पंचेन्द्रिय जीव

जटाशंकर

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

घटाशंकर ने अपने पुत्र जटाशंकर को एक लिफाफा पकडाते हुए कहा- जा बेटा! बहुत जरूरी पत्र है। तुम डाकघर जाओ। और ये लो पांच रूपये, इसका टिकट लेना, इस लिफाफे पर लगाना और पोस्ट बॉक्स में डाल देना।

आधे घंटे के बाद जब जटाशंकर वापस आया तो पिताजी ने पूछा- बेटा! लिफाफा पोस्ट कर दिया।

जटाशंकर ने कहा- हाँ पिताजी! पोस्ट कर दिया।

पिताजी ने पूछा- टिकट बराबर लगा दी थी न!

जटाशंकर ने मुस्कुराकर कहा- पिताजी! पूरी बात जान कर आप मेरी होशियारी की तारीफ किये बिना नहीं रहेंगे। पिताजी! टिकट लगाने की जरूरत ही नहीं समझी। क्योंकि पोस्ट मास्टर का ध्यान दूसरी तरफ था तब मैंने चुपके से उस लिफाफे को दूसरे लिफाफों के साथ डाल दिया।

पोस्ट मास्टर को पता भी नहीं चला।

यों कहकर जटाशंकर ने पांच रूपये का नोट पिताजी की ओर बढाते हुए मुस्कुराया। और पिताजी को यों देखने लगा जैसे पूरी बात जानकर पिताजी पुरस्कार देंगे।

सुनते ही पिताजी ने अपना दायां हाथ घुमाकर जटाशंकर के बायें गाल पर जोर से एक थप्पड मारा, जटाशंकर का चेहरा उत्तर से दक्षिण की ओर घूम गया। वह समझ नहीं पाया कि उसकी समझदारी का यह क्या इनाम मिला!

पोस्ट मास्टर से नजर बचाकर लिफाफा डाल देने से टिकट के रूपये बच नहीं सकते। अपने मन में भले आप राजी हो जाये। बाद में दुगुने देने पडेंगे। ऐसे ही कर्मराज से कोई बच नहीं सकता।

पूज्य गुरुदेव मरुधर मणि उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
के 55 वें वर्ष प्रवेश पर (दि. 15 मार्च 2014)
पर हार्दिक अभिनंदन...अभिवंदन

गुरुदेव मेरे, गुरुदेव मेरे,
गुरुदेव मेरे, गुरुदेव मेरे...
तेरे दम से चेहरे पे रौनक आई है,
तूं है तो ये जिन्दगी मुस्कुराई है।
हमने जो कुछ भी है पाया,
तेरी रहमत का असर है,
गुरुदेव मेरे गुरुदेव मेरे।।

श्री गोरधनमलजी प्रतापमलजी सेठिया परिवार
धोरीमन्ना वाले

॥ डुठारिया नगर मण्डन श्री आदिनाथाय नमः ॥
॥ दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ॥
॥ खरतरगच्छाधिपति पू. गणनायक श्री सुखसागर-सद्गुरुभ्यो नमः ॥

छाजेडों की नगरी

श्री डुठारिया नगरे

भव्यातिभव्य

अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे

॥ सकल श्री संघ को सादर आमंत्रण ॥

* पावन निश्रा *
पूज्य गुरुदेव मरूधर मणि उपाध्याय प्रवर **श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**

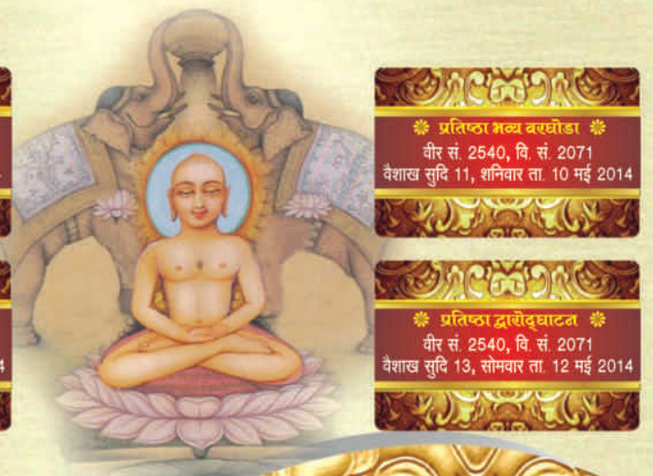

* प्रतिष्ठा महोत्सव प्रारंभ *
वीर सं. 2540, वि. सं. 2071
वैशाख सुदि 5, रविवार ता. 4 मई 2014

* प्रतिष्ठा भव्य वरघोडा *
वीर सं. 2540, वि. सं. 2071
वैशाख सुदि 11, शनिवार ता. 10 मई 2014

* प्रतिष्ठा पावन दिन *
वीर सं. 2540, वि. सं. 2071
वैशाख सुदि 12, रविवार ता. 11 मई 2014

* प्रतिष्ठा द्वारोद्घाटन *
वीर सं. 2540, वि. सं. 2071
वैशाख सुदि 13, सोमवार ता. 12 मई 2014

* निवेदक *
श्री आदेश्वर जैन देवस्थान पेढी
मु.पो. डुठारिया, स्टे. सोमेसर, जिला - पाली (राज.)- ३०६५०३

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2012- 2014 Date of Posting 7th

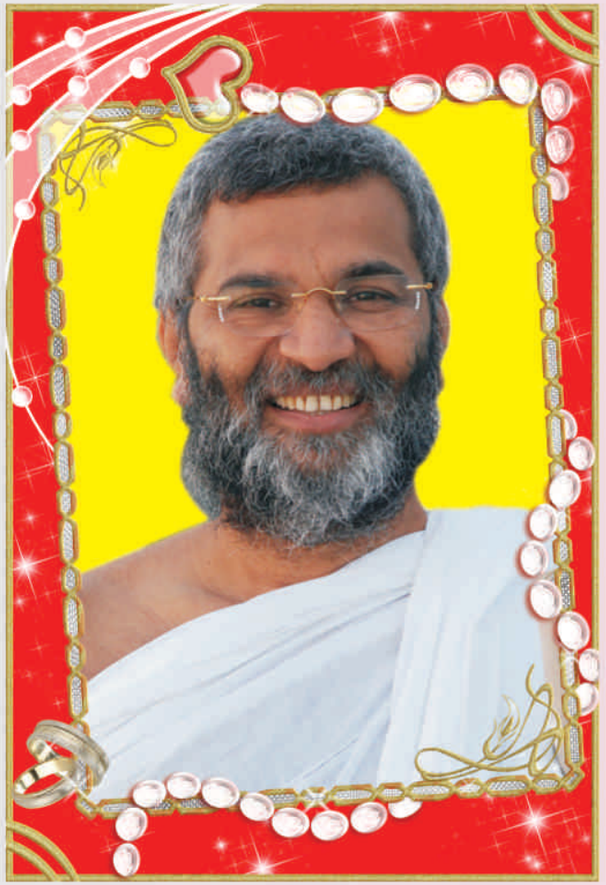

पूज्य गुरुदेव मरूधर मणि
उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा
के
55वें वर्ष प्रवेश
(ता. 15 मार्च 2014)
पर
हार्दिक अभिनंदन...
अभिवंदन...

निवेदक

श्री कल्याणपुरा जैन श्वे. श्री संघ

बाडमेर राज.

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in www. jahajmandir.com www.jahajmandir.blogspot.in

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408